www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ४ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • फरवरी (द्वितीय) २०१७

महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

श्री मनोज आर्य 'विश्वकीर्ति आर्य युवा कार्यकर्ता पुरस्कार' (११००० रुपए) से सम्मानित
बाएँ से दाएँ पं. सत्यानन्द वेदवागीश, श्री सत्यानन्द आर्य, ठा. विक्रम सिंह, श्री महेंन्द्र आर्य,
श्री मनोज आर्य, श्री श्रुतिशील झंवर एवं संचालन करते हुए श्री दिनेशचन्द्र शर्मा

श्री प्रभाकर आर्य को 'स्वामी देवेन्द्रानंद वैदिक धर्म प्रचारक पुरस्कार' (५१०० रुपए)
से सम्मानित करते हुए पं. सत्यानन्द वेदवागीश एवं प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : ०४

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: फाल्गुन कृष्ण २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु.,

आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,

आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

फरवरी द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. आत्मनिवेदन	सम्पादकीय	०४
०२. विधिहीन यज्ञ और उनका फल	स्वामी मुनीश्वरानन्द	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
०४. शिक्षा समानता का आधार है	आचार्य धर्मवीर	१३
०५. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१५
०६. परमेश्वर व्यापक अन्तर्यामी.....	डॉ. कृष्णपाल सिंह	१६
०७. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१८
०८. हिन्दू जाति के रोग का वास्तविक...	भाई परमानन्द	१९
०९. अविद्या को दूर करना ही देशोन्नति...	सत्यवीर शास्त्री	२२
१०. जिज्ञासा समाधान-१२७	आचार्य सोमदेव	२६
११. पुस्तक समीक्षा	देवमुनि	३०
१२. पाठकों के विचार	स्वामी जिलानन्द	३१
१३. संस्था-समाचार		३२
१४. बुतपरस्ती का शुक्रिया	पं. नारायणप्रसाद	३६
१५. 'जल्लीकट्टू का विरोध'-एक.....	प्रभाकर	४०
१६. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com →

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.thearyasamaj.org

आत्मनिवेदन

आचार्य धर्मवीर जी नहीं रहे। यह सुनना और देखना अत्यंत हृदय विदारक रहा है। आचार्य धर्मवीर जी देशकाल के विराट मंच पर महर्षि दयानन्द के विचारों के अद्वितीय कर्मवीर थे। महर्षि दयानन्द के विचारों के विरुद्ध प्रतिरोध की उनकी क्षमता जबर्दस्त थी। वैचारिक दृष्टि से तात्विक चिन्तन का सम्प्रेषण सहज और सरल था, यही उनका वैशिष्ट्य था, जो उन्हें अन्य विद्वानों से अलग खड़ा कर देता है। वे जीवनपर्यन्त संघर्ष-धर्मिता के प्रतीक रहे। 'परोपकारी' के यशस्वी सम्पादक के रूप में उन्होंने वैदिक सिद्धान्त ही नहीं, अपितु समसामयिक विषयों पर अपने विचारों को खुले मन से प्रकट किया। वे सत्य के ऐसे योद्धा थे जो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित पथ के सशक्त प्रहरी रहे और ऐसा मानदण्ड स्थापित कर गये, जो अन्यों के लिये आधारपथ सिद्ध होगा। मानवीय व्यवहारों के प्रति वे सिद्धहस्त थे। भले ही अपने परिवार पर केन्द्रीभूत न हुये हों, परन्तु समस्त आर्यजगत् की आदर्श परोपकारिणी सभा के विभिन्न प्रकल्पों के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित रहे।

उन्होंने 'परोपकारी' का सम्पादन करते हुए जिन मूल्यों, सिद्धान्तों का निर्भय होकर पालन किया, जिस शैली और भाषा का प्रयोग किया, जिन तथ्यों के साथ सिद्धान्तों को पुष्ट किया, वे प्रभु की कृपा से ही संभव होते हैं। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि कीर्तिशेष आचार्य धर्मवीर जी ने सम्पादन का जो शिखर निर्धारित किया है वहाँ तक पहुँचना यद्यपि असंभव है तथापि केवल भक्ति-भावना से मैं चलने का प्रयास भी कर लूँ तो भी मेरे लिए परमशुभ हो सकेगा। प्रभु मुझे इसकी शक्ति दे।

'परोपकारी' के पाठक विगत लगभग ३३ वर्षों से अमूल्य विरासत से परिपूर्ण तार्किक विश्लेषण से सम्पृक्त सम्पादकीय पढ़ने के आदी हुए हैं, उस स्तर को बनाये रखना यद्यपि मेरे लिये दुष्कर है, लेकिन पाठक हमारे मार्गदर्शक हैं, मैं आचार्य धर्मवीर जी के द्वारा निर्धारित पथ का पथिक मात्र हो सकूं, यही मेरे लिये परम सौभाग्य की बात होगी।

आज चुनौतियाँ हैं, दबाव हैं, सिद्धान्तों के प्रति मतवाद है, फिर भी हमें इन सभी से सामना करना है।

आचार्य धर्मवीर जी ने महर्षि दयानन्द के चिन्तन को सम्पूर्ण रूप में स्वीकार कर उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की जीवन्तता में अद्वितीय साहस का परिचय दिया। राष्ट्र की आकांक्षा को दृष्टिगोचर रखते हुए वे अघोषित आर्यनेता के रूप में आर्यजगत् के सर्वमान्य नेतृत्वकर्ता बने। वैदिक संस्कृति और सभ्यता के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों को समृद्ध ही नहीं किया अपितु अपने व्यक्तित्व से, लेखनी से, वक्तृत्वकला से राष्ट्रीय तत्वों की अग्नि को उद्बुध किया।

आचार्य डॉ. धर्मवीर कुशल संगठनकर्त्ता थे, उन्होंने दृढ़ इच्छाशक्ति और समर्पण से जहाँ परोपकारिणी सभा को आर्थिक स्वावलंबन दिया, वहीं सृजनात्मक अभिव्यक्ति से वैदिक सिद्धान्तों के विरोधियों को भी वैदिक-दर्शन से आप्लावित किया। आचार्य धर्मवीर ने जीवनपर्यंत उत्सर्ग करने का ही कार्य किया, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने स्वयं को परिपूर्ण किया है। वैदिक पुस्तकालय में नित्य नूतन ग्रन्थों का प्रकाशन, वितरण, नवलेखन को प्रोत्साहन, वैदिक साहित्य के अध्येताओं को वैदिक साहित्य पहुँचाना जैसे पुनीत कार्य उनके कर्तृत्व के साक्ष्य परिणाम हैं। उन्होंने सारस्वत साधना से विभिन्न विद्वानों, संन्यासियों के व्यक्तिगत पुस्तकालयों को मँगवाकर वैदिक पुस्तकालय को समृद्ध किया है।

आचार्य डॉ. धर्मवीर ने महर्षि दयानन्द के हस्तलेखों, उनके द्वारा अवलोकित ग्रन्थों एवं उनके पत्रों इत्यादि का डिजिटलाईजेशन करने का अभूतपूर्व कार्य किया ताकि आगामी पीढ़ी को उस अमूल्य धरोहर को संरक्षित कर

www.thearyasamaj.org

सौंपा जा सके। आर्यसमाज के प्रसिद्ध चिन्तकों को निरन्तर प्रोत्साहन कर लेखन के लिए सहयोग प्रदान करने का उन्होंने जो महनीय कार्य किया है, वह स्तुत्य है।

वैदिक चिन्तन के अध्येता आचार्य धर्मवीर जी ने परोपकारी पत्रिका को पाक्षिक बनाकर उसकी संख्या को १५ हजार तक प्रकाशित कर, देश-विदेश में पहुँचाकर एक अभिनव कार्य संपादित किया। उनकी भाषा में सहज प्रवाह और ओज था। वैदिक विचारों के प्रति वे निर्भीक और ओजस्वी वक्ता के रूप में हमेशा याद किये जाएंगे। उनकी मान्याता थी कि असत्य के प्रतिकार में निर्भय होकर अपने विचारों को व्यक्त करने का अधिकार जन्मजात है। लेकिन संवादहीनता उन्हें स्वीकार्य नहीं थी। यही कारण था कि वे अजातशत्रु कहलाते थे। परोपकारी के लेखों और संपादकीय के द्वारा आर्यजगत् में उनकी प्रासंगिकता निरन्तर प्रेरणादायी बनी रही। सहज और सरल शब्दों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति कितने ही बड़े व्यक्ति की आलोचना करने में वे कभी भयभीत नहीं हुए। उन्होंने भारत के समस्त विश्वविद्यालयों के कुलपतियों व कुलसचिवों को परोपकारी पत्रिका नि:शुल्क पहुँचाने का अभिनव कार्य किया।

उन्होंने देवभाषा संस्कृत को जिया और अपने परिवार से लेकर समस्त आर्यजनों को भी आप्लावित किया। यह कहना और अधिक प्रासंगिक होगा कि अष्टाध्यायी-पद्धति के अध्ययन और अध्यापन को महाविद्यालय में ही नहीं अपितु ऋषिउद्यान में संचालित गुरुकुल में पाणिनी-परम्परा का निर्वहन करने का उन्होंने अप्रतिम कार्य किया।

आचार्य धर्मवीर जी ऋषिउद्यान में विभिन्न भवनों के नवनिर्माण के प्रखर निर्माता थे, जिन्होंने देश में निरन्तर भ्रमण करते हुए धन का संग्रह कर विद्यार्थियों, साधकों, वानप्रस्थियों और संन्यासियों के लिए श्रेष्ठ आवास की सुविधा प्रदान की, ताकि ऋषिउद्यान में निरन्तर आध्यात्मिक जीवन का संचार होता रहे एवं चर्चा का कार्य संपादित होता रहे। वे स्पष्ट वक्ता थे। उन्हें कितनी ही बार विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य का पद, चुनाव लड़ने, पुरस्कार प्राप्त करने हेतु आग्रह किया गया, लेकिन उनके लिए ये पद ग्राह्य नहीं थे। उनके लिए महर्षि दयानन्द का अनुयायी होना ही सबसे बड़ा पद था।

आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य की प्रशस्त परम्परा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। वे अकेले ही अन्याय का प्रतिकार करने में समर्थ थे। वे उन मतवादियों के लिए कर्मठ योद्धा थे, जो भारत विरोधी मत रखते थे। उन्हें यह स्वीकार नहीं था कि लोग क्या कहेंगे अपितु उन्हें यह स्वीकार्य था कि आर्ष परम्परा क्या है। समकालीन प्रख्यात विचारकों, राजनीतिक व्यक्तियों, विद्वानों का वे व्यक्तिश: आदर करते थे, परन्तु वैदिक विचारधारा के विरुद्ध लोगों का खण्डन करने में वे कोताही नहीं बरतते थे। उन्होंने परोपकारिणी सभा के विकल्पों का संवर्धन किया और परोपकारिणी सभा की यशकीर्ति को फैलाने में विशेष योगदान किया। आलोचना और विरोधों का धैर्यपूर्वक सामना करना उनकी विशेषता थी।

वे दिखने में कठोर थे, लेकिन हृदय से अत्यन्त सरल थे। चाहे आचार्य वेदपाल सुनीथ हों या श्री नरसिंह पारीक या डॉ. देवशर्मा या सहायक कर्मचारी सुरेश शेखावत, मैंने ऐसे दृढ़निश्चयी स्थितप्रज्ञ व्यक्ति की आँखों में उन सबके लिए अश्रुकणों को बहते देखा है। आर्थिक सहयोग करना, बिना किसी को बताये, यह उनकी मानवीय श्रेष्ठता का अद्वितीय उदाहरण है।

ऐसे चिन्तक, विशेषताओं के आगार, वैदिक चिन्तन के सजग प्रहरी तथा विचारों के विरल विश्लेषक आचार्य डॉ. धर्मवीर जी की संपादकीय परम्परा के कार्य का प्रारम्भ करते हुए मैं उन्हें जिन्होंने अनादि ब्रह्म की उपासना के साथ राष्ट्रचेता महर्षि दयानन्द के विचार और आचार से कभी विमुख नहीं हुए, को शत्-शत् नमन करता हुआ उस पथ का अनुयायी बनने का प्रयास करूं, ऐसा विश्वास दिलाता हूँ।

आपका

- दिनेश

www.thearyasamaj.org

विधिहीन यज्ञ और उनका फल

- स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान् रहे हैं। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'विधिहीन यज्ञ और उनका फल' यज्ञ सम्बन्धी कुरीतियों पर एक सशक्त प्रहार है। इसी पुस्तक का कुछ अंश यहाँ पाठकों के अवलोकनार्थ प्रकाशित है। **-सम्पादक**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की मान्यता है कि श्री कृष्ण जी एक आप्त पुरुष थे। यज्ञ के विषय में इस आप्त पुरुष का कहना है कि-

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्,
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।।

-गीता १७/१३

१. विधिहीनं यज्ञं तामसं परिचक्षते।
२. असृष्टान्नं यज्ञं तामसं परिचक्षते।
३. मन्त्रहीनं यज्ञं तामसं परिचक्षते।
४. अदक्षिणं यज्ञं तामसं परिचक्षते।
५. श्रद्धा विरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।

इन पाँच प्रकार के दोषों में से किसी एक, दो, तीन, चार या पाँचों दोषों से युक्त यज्ञ तामसी कहा जाता है। **तामसी कर्म अज्ञानमूलक होने से परिणाम में बुद्धिभेदजनक तथा पारस्परिक राग, द्वेष, कलह, क्लेशादि अनेक बुराइयों का कारण होता है।**

प्रस्तुत लेख में हम **'विधिहीनं यज्ञं तामसं परिचक्षते।'** इस एक विषय पर स्वसामर्थ्यानुसार कुछ विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. श्री कृष्ण जी का कहना है कि विधिहीन यज्ञ तामसी होता है। विधि के अनुसार सबसे प्रथम स्थान यजमान का है। जो **'यष्टुमिच्छति'** यज्ञ करना चाहता है। यज्ञ का सम्पूर्ण संभार तथा व्यय यजमानकर्तृक होता है। अग्नि यजमान की, अग्निशाला (यज्ञशाला) यजमान की, हविर्द्रव्य यजमान का। ऋत्विज् यजमान के। उनका मधुपर्कादि से सत्कार करना तथा उनकी उत्तम भोजन व्यवस्था यजमान कर्तृक। उनका शास्त्रानुसार दक्षिणा द्रव्य यजमान का। इतनी व्यवस्था के साथ अग्न्याधान से पूर्णाहुति तक का पूरा अनुष्ठान ऋत्विजों की देखरेख में यजमान करता है। यजमान इस सामर्थ्य से युक्त होना चाहिये। अपरं च पूर्णाहुति के बाद उपस्थित जनता से पूर्णाहुति के नाम से तीन-तीन आहुतियाँ डलवाना पूर्णरूपेण नादानी और अज्ञानता है। इसका विधि से कोई सम्बन्ध न होने से यह भी एक विधिविरुद्ध कर्म है, जिसे साहसपूर्वक बन्द कर देना चाहिए। इस आडम्बर से युक्त यज्ञ भी तामसी होता है। क्या आर्यसमाज संगठन के यजमान तथा ऋत्विक् कर्म कराने वाले विद्वान् इस व्यवस्था तथा यजमान सम्बन्धी इस विधि-विधान के अनुसार यज्ञ करते-कराते हैं। जब पकड़कर लाया हुआ यजमान तथा विधिज्ञान शून्य ऋत्विक् इन बातों को छूते तक नहीं तो केवल विधिविरुद्ध आहुति के प्रकार 'ओम् स्वाहा' के लिए ही मात्र आग्रह करना कौनसी बुद्धिमत्ता है। इस उपेक्षित वृत्त को देखकर यही कहा जायेगा कि ऋत्विक् कर्मकर्त्ता सभी विद्वान् इन विधिहीन यज्ञों के माध्यम से केवल दक्षिणा द्रव्य प्राप्त कर अपने आप को धन्य मानते हैं तथा यजमान अपने आप को पूर्णकाम समझता है, विधिपूर्वक अनुष्ठान की दृष्टि से नहीं।

ऐसे यजमान और ऋत्विक् सम्बन्धी-ब्राह्मण में महाराज जनमेजय के नाम से एक उपाख्यान में कहा गया है कि-

'अथ ह तं व्येव कर्षन्ते यथा ह वा इदं निषादा वा सेलगा वा पापकृतो वा वित्तवन्तं पुरुषमरण्ये गृहीत्वा कर्तं (गर्तं) मन्वस्य वित्तमादाय द्रवन्ति, एवमेव त ऋत्विजो यजमानं कर्त्तमन्वस्य वित्तमादाय द्रवन्ति यमनेवं विदोयाजयन्ति। अनेवं विदो अभिषेक प्रकारं (अनुष्ठान प्रकारं वा) अजानन्त ऋत्विजोयं क्षत्रियं (यजमान वा) याजयन्ति। तं क्षत्रियं (यजमानं वा) विकर्षन्त्येव विकृष्टमपकृष्टं कुर्वन्त्येव। तत्रेदं निदर्शनमुच्यते।' - ए.ब्रा. ३७/७

सायण भाष्य:- निषादा नीचजातयो मनुष्या:। सेलगाश्चौरा:। इडाऽन्नं तया सह वर्त्तन्त इति सेडा।

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३१ पर.....

www.thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

वृद्धों की दिनचर्या:- सेवानिवृत्त होने पर क्या करें? समय कैसे बिताया जाये? यह समस्या बहुतों को सताती है। ऐसा इसलिये होता है, क्योंकि अधिकांश लोग उद्देश्यहीन जीवन जीते हैं। वे पैदा हो गये, इसलिये जीना पड़ता है। खाने-पीने के आगे कुछ सोचते ही नहीं। दयानन्द कॉलेज शोलापुर में विज्ञान के एक अत्यन्त योग्य प्राध्यापक टोले साहिब थे। धोती पहने कॉलेज में आते थे। अध्ययनशील थे, परन्तु थे नास्तिक। एक बार वह हमारे निवास पर पधारे। मेरे स्वाध्याय व अध्ययन की उन्होंने वहाँ बैठे व्यक्तियों से चर्चा चला दी। वह सेवानिवृत्त होने वाले थे। उनकी पुत्रियों के विवाह हो चुके थे। अपने बारे में बोले, मेरी समस्या यह है कि रिटायर होकर समय कैसे बिताऊँगा? मैं नास्तिक हूँ। मन्दिर जाना, सन्ध्या-वन्दन में प्रात:-सायं समय लगाना, सत्संग करना, यह मेरे स्वभाव में नहीं।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी से प्रात: भ्रमण करते समय एक व्यक्ति ने पूछा, मुझे बताइये मैं रिटायर होने वाला हूँ। रिटायर होकर क्या करूँ? उपाध्याय जी ने कहा, जो आप अब तक करते रहे हो, वही करोगे। यह उत्तर बड़ा मार्मिक है। कई व्यक्ति रिटायर होने पर मुझसे भी यही प्रश्न पूछते हैं कि आप दिनभर व्यस्त रहते हैं, हमें भी कुछ बतायें, हम क्या करें?

डॉ. वसन्त जी का उदाहरण:- परोपकारी के एक प्रेमी पाठक डॉ. स.ल. वसन्त ९२ वर्ष पूरे करने वाले हैं। देश के एक जाने-माने आयुर्वेद के आचार्य रहे हैं। अब बच्चे कोई काम-धंधा नहीं करने देते। कई प्रदेशों में उच्च पदों पर कार्य कर चुके हैं। वह दिनभर गायत्री जप, ओ३म् का नाद और वेद के स्वाध्याय में व्यस्त-मस्त रहते हैं। परोपकारिणी सभा से चारों वेद भाष्य-सहित मंगवाये। डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सोमदेव जी, कर्मवीर जी व लेखक उनके दर्शन करने गये थे। तब एक वेद का स्वाध्याय पूरा करके दूसरे वेद का स्वाध्याय आरम्भ किया था।

अब उन्हें असली महात्मा पुस्तक भेंट करने गया, तो मेरे साथ मेरा नाती पुलकित अमेरिका में एक गोष्ठी में भाग लेने से पूर्व उनका आशीर्वाद लेने गया। हम यह देखकर अत्यन्त दंग रह गये कि आप तब तीन वेद पूरे करके चौथे का पाठ कर रहे थे। अपनी दिनचर्या के कारण वह सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। शरीर में किसी विकार का प्रश्न ही नहीं। परोपकारी के आरपार जाकर उन्हें चैन आता है।

ऐसे ही मैंने आचार्य उदयवीर जी को सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय व अनुसन्धान में डूबा देखा। जीवन की अन्तिम वेला में भी उनकी दिनचर्या सबके लिये एक उदाहरण थी। जो व्यक्ति आनन्दपूर्वक वृद्धावस्था में जीना चाहता है, उसे अपनी शास्त्र-सम्मत दिनचर्या बनानी चाहिये। अमृत वेला में उठना, भ्रमण, प्राणायाम, व्यायाम, उपासना व स्वाध्याय को जीवन का पौष्टिक आहार मानकर जीने वाले सुखपूर्वक जीते मिलेंगे। संसार से सुखपूर्वक विदा होने के इच्छुक भी दिनचर्या बनाकर जीना सीखें और कोई मार्ग है ही नहीं।

चाँदापुर शास्त्रार्थ का भय-भूत:- एक आर्य भाई ने यह जानकारी दी है कि आपने ऋषि-जीवन की चर्चा करते हुए पं. लेखराम जी के अमर-ग्रन्थ के आधार पर चाँदापुर शास्त्रार्थ की यह घटना क्या दे दी कि शास्त्रार्थ से पूर्व कुछ मौलवी ऋषि के पास यह फरियाद लेकर आये कि हिन्दू-मुसलमान मिलकर शास्त्रार्थ में ईसाई पादरियों से टक्कर लें। आप द्वारा उद्धृत प्रमाण तो एक सज्जन के लिये भय का भूत बन चुका है। न जाने वह कितने पत्रों में अपनी निब घिसा चुका है। अब फिर आर्यजगत् साप्ताहिक में वही राग-अलापा है। महाशय चिरञ्जीलाल प्रेम जैसे सम्पादक अब कहाँ? कुछ भी लिख दो। सब चलता है। इन्हें कौन समझावे कि आप पं. लेखराम जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी के सामने बौने हो। कुछ सीखो, समझो व पढ़ो।

मेरा निवेदन है कि इनको अपनी चाल चलने दो। आपके लिये एक और प्रमाण दिया जाता है। कभी बाबा छज्जूसिंह जी का ग्रन्थ 'लाइफ एण्ड टीचिंग ऑफ स्वामी दयानन्द' अत्यन्त लोकप्रिय था। इस पुस्तक के सन् १९७१

www.thearyasamaj.org

के संस्करण में डॉ. भवानीलाल जी भारतीय ने इसका गुणगान किया था। जो प्रमाण पं. लेखराम जी का मैंने दिया है, उसी चाँदापुर शास्त्रार्थ उर्दू को बाबा छज्जूसिंह जी ने अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है। पं. लेखराम जी को झुठलाने के लिये नये कुतर्क गढ़कर कोई कुछ भी लिख दे, इन्हें कौन रोक सकता है। सूर्य निकलने पर आँखें मीचकर सूर्य की सत्ता से इनकार करने वाले को क्या कह सकते हैं। अब भारतीय जी को क्या कहते हैं? यह देख लेना।

कुछ नया साहित्य:- आर्यसमाज में इन दिनों कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। आर्यसमाजों को इनके प्रसार का विशेष उद्योग करना चाहिये। **'वेदानुशासनम्'** नाम की यह पुस्तिका श्री पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश की उत्तम व मौलिक देन है। पूज्य पण्डित जी ने वैदिक जीवन को सफल बनाने के लिये आर्यों के कर्त्तव्यों तथा मन्तव्यों पर चारों वेदों के १६८ मन्त्रों को चुनकर उनके भावार्थ सहित इस पुस्तिका में दिया है। इसे 'गागर में सागर' कहना चाहिये। सब मूलभूत सिद्धान्तों का वेदमन्त्रों से ज्ञान करवा दिया है। श्री पीताम्बर जी व श्री कमल जी दोनों आर्यबन्धु इस शुभ कार्य में सहयोग के भागी बने हैं। उन्हें भी हम बधाई देते हैं।

Arya Samaj and the Vedic World View:- जिस पठनीय महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की हमें प्रतीक्षा थी, वह छप गया है। अंग्रेजी जानने वालों तक यह ग्रन्थ पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है। श्री डॉ. रामप्रकाश जी ने एक करणीय कार्य कर दिखाया है। आपने तथा आपके सुपुत्र श्री जितेन्द्र जी ने इस पर बहुत श्रम किया है। नाम-नाम के सम्पादक नहीं, एक-एक लेख, एक-एक पृष्ठ पर सम्पादकों की छाप है। अभी पूरा ग्रन्थ तो हम नहीं पढ़ सके। कहीं-कहीं कुछ भूलचूक व कमी भी रही है। उन पर विचार कर सुधार करना चाहिये, यथा पृष्ठ २८४ पर प्रथम डी.ए.वी. कॉलेज के प्राध्यापकों में बालमुकन्द नाम भी दिया है। हमें इसमें संशय है। इस नाम का तब कोई प्राध्यापक नहीं था। इस पर विचार होना चाहिये। संस्था का नाम जो डी.ए.वी. रखा गया, इसे लाला लाजपतराय जी ने अपनी एक पुस्तक में बहुत बड़ी भूल बताया है। उनका मत है कि सारी शक्ति Anglo पर लग गई Vedic की तो बारी ही न आ पाई। यह है भी सच। पं. भगवद्दत्त जी की कोटि का विद्वान् तिरस्कृत होकर संस्था से निकल गया, यह बड़ी दुःखद घटना है।

पृष्ठ १९४ पर मेरे लेख में मुद्रण दोष से आर्यनेता स्वतन्त्रता सेनानी श्री शेषराव वाघमारे की बजाय उनके पिताजी को स्वतन्त्रता सेनानी बताया गया है। यह मुद्रण दोष अगले संस्करण में नहीं होना चाहिये। पृष्ठ १५२ पर श्री प्रचेतस के लेख में पं. धर्मदेव जी कृत सामवेद के अंग्रेजी अनुवाद का उल्लेख होना चाहिये था। इसी पृष्ठ पर स्वामी ब्रह्ममुनि जी का नाम ब्रह्मानन्द छप गया है। पृष्ठ १५३ पर पं. धर्मदेव जी के आंशिक सामवेद के अंग्रेजी भाष्य की चर्चा है। हमने उनका सम्पूर्ण सामवेद किसी प्रेमी को दे दिया। अत्युत्तम था।

इसी लेख में पृष्ठ १६८ पर पं. रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा 'हक प्रकाश' उर्दू पुस्तक के उत्तर लिखने की बात ठीक नहीं। यह भूल कैसे हो गई। इस पुस्तक का उत्तर स्वामी योगेन्द्रपाल जी, स्वामी दर्शनानन्द जी और पं. चमूपति जी द्वारा दिया गया और वर्तमान में इन पंक्तियों के लेखक ने भी दिया। इस प्रकार की ठोस जानकारी देने वाले पठनीय लेखों का प्रकाशन आनन्ददायक है।

डॉ. वेदपाल जी द्वारा संग्रहीत ऋषि के कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों का एक संग्रह परोपकारिणी सभा ने प्रकाशित करवाया। ग्रन्थ परिचय बहुत अच्छा छपा है। श्री कृष्णसिंह बारहट के क्रान्तिकारी पत्र इस संग्रह में होने चाहियें थे। श्रद्धाराम फिलौरी तो ऋषि के जीवनकाल में चल बसा था। उसका महत्त्वपूर्ण पत्र दिया गया है। यह तो अच्छा हुआ, परन्तु ग्रन्थ के अन्त में "यह कुम्भ मेला के थोड़ा बाद लिखा गया" यथा स्थान छपना चाहिये था। कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों के साथ पाद टिप्पणी नहीं दी गई। भूमिका बहुत विचारणीय है। इसका प्रचार होना चाहिये।

परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय में दस्तावेज़:- इस समय आर्यसमाज के साहित्य व इतिहास विषयक अलभ्य दस्तावेज़ों का भण्डार कहीं है तो परोपकारिणी सभा के पास ही (सर्वाधिक) है। हमने इस ऋषिमेला पर कोई सवा सौ दस्तावेजों की प्रदर्शनी भी लगाई थी।

बहुत से लोग (आर्यसमाजेतर भी) इनकी फ़ोटो लेना

www.thearyasamaj.org

चाहते हैं। इससे यह दस्तावेज शीघ्र नष्ट हो जायेंगे। थोड़ा-थोड़ा करके ऐसे दुर्लभ दस्तावेज़ और भी अजमेर पहुँचा दिये जायेंगे। इनकी सुरक्षा व उपयोग पर आर्य मात्र को गम्भीरता से विचार करना चाहिये। इस सेवक ने ऋषि-भक्ति से छलकते हृदय से अपनी जीवन पूँजी सभा को बहुत कुछ भेंट कर दी है, अभी और भी की जा रही है। सभा के पास ऐसे दस्तावेज़ हैं, जो अन्यत्र कहीं भी नहीं।

श्री अनिल आर्य तथा श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु को भी कई मूल्यवान् दुर्लभ स्रोत व दस्तावेज़ भेंट किये जा चुके हैं। यह कड़ा नियम होना चाहिये कि सभा के किसी विद्वान् की देखरेख में ही कोई गवेषक वहीं इनका लाभ उठा सके। पहले हरबिलास जी के समय सभा का ऐसा ही नियम था। उनके पश्चात् तस्करी करने वालों ने अपना कौशल दिखा दिया। दर्शकों को इस ज्ञान भण्डार की जानकारी देने के लिये हमें दो-तीन योग्य युवकों को प्रशिक्षण देना होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती- सम्पूर्ण जीवन चरित्र:- पिछली बार इस ग्रन्थ की मौलिकता तथा विशेषताओं पर हमने पाँच बिन्दु पाठकों के सामने रखे थे। अब आगे कुछ निवेदन करते हैं।

६. इस जीवन-चरित्र में ऋषि जीवन विषयक सामग्री की खोज तथा जीवन-चरित्र लिखने के इतिहास पर दुर्लभ दस्तावेज़ों के छायाचित्र देकर प्रामाणिक प्रकाश डाला गया है। दस्तावेज़ों से सिद्ध होता है कि ऋषि के बलिदान के समय पं. लेखराम जी के अतिरिक्त कोई उपयुक्त व्यक्ति- इस कार्य के लिये ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, डगर-डगर धक्के खाने को तैयार ही नहीं था। सब यही कहते थे कि ऋषि जी की घटनायें उनके घर में मेज़ पर पहुँचाई जायें। ऐसे दस्तावेज़ हमने खोज-खोजकर इस ग्रन्थ में दे दिये हैं। ऋषि का जीवन-चरित्र लिखने में तथा सामग्री की खोज में जो महापुरुष, विद्वान् और ऋषिभक्त नींव का पत्थर बने, हमने उनके चित्र खोज-खोजकर इस ग्रन्थ में दिये हैं। हमें कहा गया कि महाशय मामराज जी का तो चित्र ही नहीं मिलता। महर्षि के पत्रों की खोज के लिये पं. भगवद्दत्त जी, पूज्य मीमांसक जी के इस अथक हनुमान् का चित्र खोजकर ही चैन लिया। ऋषि जीवनी के एक लेखक जिसको इस अपराध में घर-बार, सगे-सम्बन्धी, सम्पदा तथा परिवार तक छोड़ना पड़ा, उस तपस्वी निर्भीक विद्वान् पं. चमूपति का चित्र इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में देकर एक नया इतिहास रचा है। जिस-जिस ने ऋषि जीवन के लिये कुछ मौलिक कार्य किया, सामग्री की खोज की, उन सबके चित्र देने व चर्चा करने का भरपूर प्रयास किया।

७. ऋषि के विषपान, बलिदान व दाहकर्म संस्कार का विस्तृत तथा मूल स्रोतों के आधार पर वर्णन किया गया है। लाला जीवनदास जी ने अरथी को कंधा दिया, ऋषि ने नाई को पाँच रुपये दिलवाये, ऋषि की आँखें खुली ही रह गईं- यह प्रामाणिक जानकारी इसी ग्रन्थ में मिलेगी। प्रतापसिंह की विषपान के पश्चात् ऋषि से जोधपुर में कोई भेंट नहीं हुई और आबू पर भी कोई बात नहीं हुई। ये सब प्रमाण हमने खोज निकाले।

८. जोधपुर के राजपरिवार की कृपा से बलिदान के पश्चात् परोपकारिणी सभा को कोई दान नहीं मिला। २४०००/ रुपये की मेवाड़ आदि से प्राप्ति के दस्तावेज़ी प्रमाण खोजकर इतिहास प्रदूषण से ऋषि जीवनी को बचाया गया है।

९. ऋषि के बलिदान के समय स्थापित समाजों की दो सूचियाँ केवल इसी ग्रन्थ में खोजकर दी गई है।

१०. ऋषि के पत्र-व्यवहार का सर्वाधिक उपयोग इसी ग्रन्थ में किया गया है। ऋषि के कई महत्त्वपूर्ण पत्रों को पहली बार हमीं ने मुखरित किया है।

११. ऋषि के शास्त्रार्थों के तत्कालीन पत्रों व मूल स्रोतों को खोजकर, छायाचित्र देकर सबसे पहला प्रयास हमीं ने इस जीवन चरित्र में करके इतिहास प्रदूषण का प्रतिकार किया है।

१२. ऋषि के आरम्भिक काल के शिष्यों, अग्नि परीक्षा देने वाले पहले आर्यों, सबसे पहले आर्य शास्त्रार्थ महारथी राव बहादुरसिंह जी को मुखरित करके इसी ग्रन्थ में दिया गया है।

१३. पं. श्रद्धाराम फिलौरी के हृदय परिवर्तन विषयक उसके ऋषि के नाम लिखे गये ऐतिहासिक पत्र का फोटो देकर ऋषि-जीवन का नया अध्याय इसमें लिखा है।

१४. ऋषि के व्यक्तित्व का, शरीर का, ब्रह्मचर्य का

www.thearyasamaj.org

सबसे पहले जिस भारतीय ने विस्तृत वर्णन किया, वह बनेड़ा के राजपुरोहित श्री नगजीराम थे। उनकी डायरी के ऐसे पृष्ठों का केवल इसी ग्रन्थ में फोटो मिलेगा। (शेष अगले अंकों में)

'शूरता की शान श्रद्धानन्द थे':- यह सन् १९९४ से भी पहले की घटना है, आदरणीय क्षितीश कुमार जी वेदालंकार ने हमारा एक लेख 'जब महात्मा मुंशीराम जी को फांसी पर लटकाया गया' पढ़कर अत्यन्त भावुक होकर बड़े प्रेम से इस विनीत से कहा था कि अब तक जिस-जिसने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की जीवनी लिखी है, उनमें से कोई भी उर्दू नहीं जानता था। उस युग में आर्यसमाज के सब बड़े-बड़े पत्र उर्दू में छपते थे। साहित्य भी अधिक उर्दू में छपता रहा, इस कारण श्री स्वामी जी के जीवनी लेखक उनसे पूरा न्याय न कर सके। आपने आर्यसमाज के निर्माताओं के जीवन पर बहुत खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पर अब लेखनी उठायें।

गुणी कृपालु विद्वान् का आदेश शिरोधार्य करते हुये इस कार्य को करने की हाँ भर दी। कुछ वर्ष पूर्व प्रिय श्री अनिल आर्य की प्रेरणा से लिखना आरम्भ भी कर दिया, परन्तु आर्यसामाजिक कार्यों की अधिकता में यह कार्य बीच में छूट गया। अब कमर कसकर यह लेखक कुछ समय से इस कार्य में जुट गया है। आर्यवीरों की प्रेरणा पर प्राणवीर पं. लेखराम जी पर नेट पर किये जा रहे निरन्तर आक्रमणों का उत्तर प्रत्युत्तर देकर अब हम पूरा समय अपने नये ग्रन्थ 'शूरता की शान श्रद्धानन्द' के लेखन कार्य में दे रहे हैं। 'शूरता की शान श्रद्धानन्द' एक छोटी पुस्तक पहले भी दी थी। अब बहुत बड़ा ग्रन्थ लिखा जा रहा है। पं. लेखराम जी, वीर राजपाल के लहू की धार से प्रेरणा पाकर कुछ कृपालु आर्यवीर इसके प्रकाशन के लिये मैदान में अपने आप आ गये हैं।

अब कई व्यक्ति अपनी-अपनी पीएच.डी. आदि के लिये चलभाष पर लम्बी-लम्बी जानकारी चाहते हैं। ऐसे सब सज्जनों को बोलना पड़ा है- समय नहीं है। जिस कार्य को हाथ में लिया है, जीवन की सांझ में प्रभु कृपा से उसे पूरा करने दीजिये।

मित्रो! 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू की पूरी फाइल, तेज दैनिक, पतितोद्धार, 'शुद्धि समाचार' आदि पत्रों के बलिदान अंक (१९२६) हमारी पहुँच में हैं। हिन्दी सद्धर्म प्रचारक की फ़ाइल भी कभी देखी-पढ़ी थी। मिर्ज़ाइ पत्र अल्फ़ज़ल की भी सन् १९२०-१९२७ तक सारी फाईलें हमने पढ़ रखी हैं और क्या-क्या हमारी पहुँच में है, उससे पाठक सोच-समझ लें कि यह ग्रन्थ कैसा होगा? स्वामी जी महाराज के जीवनकाल में छपी उनकी प्रथम जीवनी भी हमने पढ़ी है। उनके बलिदान पर छपी सबसे पहली पुस्तक भी हमारे पास है। प्रेमी पाठकों का स्नेह व आशीर्वाद चाहिये। प्रतीक्षा करें। नये वर्ष में यह ग्रन्थ आर्यजाति को भेंट किया जायेगा।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

www.thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

www.thearyasamaj.org

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

(मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४)

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

www.thearyasamaj.org

शिक्षा समानता का आधार है

मनुष्य का व्यवहार जड़ वस्तुओं से भी होता है तथा चेतन पदार्थों से भी होता है। जड़ वस्तुओं से व्यवहार करते हुए वह जैसा चाहता है, वैसा व्यवहार कर सकता है। जड़ वस्तु को तोड़ना चाहता है, तोड़ लेता है, जोड़ना चाहता है, जोड़ लेता है, फेंकना चाहता है, फेंक देता है, पास रखना चाहता है, पास रख लेता है। वह पत्थर को भगवान् बनाकर उसकी पूजा करने लगता है, वह पत्थर उसका भगवान् बन जाता है। व्यक्ति उस पत्थर को अपनी सीढ़ियों पर लगाकर उन पर जूते रखता है, उसे उसमें भी कोई आपत्ति नहीं होती। अत: जड़ वस्तु के साथ मनुष्य का व्यवहार अपनी इच्छानुसार होता है, अपनी मरजी से होता है, जड़ वस्तु की कोई मरजी इसमें काम नहीं करती।

चेतन पदार्थों से मनुष्य सर्वथा अपनी इच्छानुकूल व्यवहार नहीं कर सकता। चेतन में पशु-पक्षी आदि प्राणियों के साथ अपना व्यवहार बलपूर्वक करता है। यद्यपि प्राणियों में चेतन पदार्थों में इच्छा होती है, उन्हें अच्छा बुरा लगता है, परन्तु मनुष्य अपनी इच्छा उन पर थोपता है। उन्हें अपनाता है, दूर करता है, प्रेम करता है, हिंसा करता है, उसमें अपनी इच्छा को ऊपर रखता है। दूसरे प्राणी प्रतिकार करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, परन्तु जितना उनका सामर्थ्य है, वे उतने ही सफल हो सकते हैं। अधिकांश में मनुष्य अपने बल से उनको अपने वश में करने का प्रयास करता है और सफल रहता है।

मनुष्य का मनुष्य के साथ इस प्रकार व्यवहार करना संभव नहीं होता। मनुष्य अज्ञानी, दुर्बल, निर्धन भी हो सकता है, इसके विपरीत ज्ञानवान्, सबल और साधन सम्पन्न भी हो सकता है। इस कारण मनुष्यों का परस्पर व्यवहार किसी एक प्रकार का या एक नियम से होने वाला नहीं होता। जो मनुष्य दुर्बल या निर्धन है, उसे अपने साधनों से मनुष्य अपने अनुकूल करने का प्रयास करता है, परन्तु जो कुछ समझ सकते हैं, उनको वश में करने के लिए ये उपाय निरर्थक हो जाते हैं। ज्ञानवान् व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिए मनुष्य दो उपाय काम में लाता है। यदि वह किसी का अपने लिए उपयोग करना चाहता है अपने स्वार्थ के लिए उन्हें काम में लेना चाहता है तो वह उनको बहकाता है, भड़काता है और अपना स्वार्थ सिद्ध करता है।

इन सबसे अलग भी एक उपाय मनुष्य अपनाता है, जिनसे वह दूसरे मनुष्यों को अपने अनुकूल बनाता है। यह परिस्थिति मनुष्य की सबसे ऊँची स्थिति होती है, जब वह अपनी बुद्धि और अपने ज्ञान से दूसरे को अपने साथ चलने के लिए सहमत कर लेता है। इसमें किसी का स्वार्थ नहीं होता। इस प्रकार सबका हित सबका लाभ मुख्य उद्देश्य होता है।

यह उपाय सबसे उत्तम होने के साथ-साथ सबसे कठिन भी है। जहाँ जड़ वस्तु मनुष्य की इच्छा के विरुद्ध नहीं चल सकती, पशु-पक्षी उसके बल से उसके बन्धन में पड़े रह सकते हैं, परन्तु मनुष्य ज्ञानवान् या साधन सम्पन्न होकर दूसरे मनुष्य के विरुद्ध चला जाता है। इसलिए एक कम बुद्धि और कम सामर्थ्य वाले व्यक्ति को अपने आधीन रखने का प्रयास करता है। वह यह प्रयास भी करता है कि उसके आधीन काम करने वाला उससे कम बना रहे। इसी भावना ने समाज में कुछ वर्गों को कमजोर बनाकर रखा है।

आज समाज में स्त्री और शूद्रों की स्थिति इसी भावना का परिणाम है। जो लोग सबको ज्ञान का अधिकारी नहीं मानते वे दूसरे पक्ष के ज्ञानवान् होने से डरते हैं। क्योंकि जो मनुष्य शिक्षित, समर्थ और स्वावालम्बी होता है, ऐसे मनुष्य को आधीन बनाकर रखना संभव नहीं है। अत: समाज के समर्थ लोगों ने स्त्री और शूद्र कहकर कमजोर लोगों को कमजोर बनाये रखने की व्यवस्था की और अपनी इच्छा को धर्म, समाज और शासन का नाम देकर कमजोर वर्ग को मानने, स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। आज जितने एक तरफा बन्धन हैं, उन पर लादे गये हैं। जैसे पर्दा, अशिक्षा, स्वतन्त्रता का अभाव। पिछले दिनों अफगानिस्तान में महिलाओं को शिक्षा से वञ्चित कर बुर्के में रहने के लिए बाध्य किया गया, कोई अंग बाहर दिखने पर उसे काट दिया गया। यह नृशंसता धर्म, सिद्धान्त

www.thearyasamaj.org

और समाजिक व्यवस्था के नाम पर की गई, जो दूसरे पक्ष की अज्ञानता और दुर्बलता के कारण संभव है।

इसके विपरीत मनुष्य मनुष्य होने के नाते समान अधिकार और कर्त्तव्य का उत्तरदायी है। इस आदर्श को वैदिक-धर्म स्वीकार करता है। वेद मनुष्यों को पारस्परिक व्यवहार और सम्बन्ध समानता के आधार पर स्थापित करने का उपदेश देता है। वैदिक-धर्म ने सभी मनुष्यों को शिक्षा का अधिकार दिया है तथा समानता से कर्त्तव्य पालन करने की भी प्रेरणा की है। आचार्य शिष्य को अपने समान बनाने की इच्छा रखता है, पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे को समान मानने की प्रतिज्ञा करते हैं। विवाह संस्कार की यह विधि ध्यान देने योग्य है-

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिस्त्वा नियुनक्तु महयम्।

विवाह संस्कार में वर-वधू एक-दूसरे के हृदय पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा करते हैं, हम परस्पर एक दूसरे के व्रतों, कार्यों कर्त्तव्यों का बोध करेंगे, उनके पालन में सहयोगी बनेंगे, ऐसा करने के लिए परस्पर संवाद बनाकर रखेंगे, एक दूसरे की बात को ध्यान से सुनेंगे, गम्भीरता से लेंगे, इसके पालन में प्रभु से सहायता की याचना करेंगे।

यही मन्त्र उपनयन-वेदारम्भ संस्कार में आचार्य शिष्य को कहते हैं।

यहां किसी को बलपूर्वक अपनी बात मनवाने का प्रयास नहीं है, अपितु बात के औचित्य को समझकर उस बात को स्वीकार करने और सहमत होने का प्रयास है। इसके लिए दोनों पक्षों को समझदार और शिष्ट होना आवश्यक है।

समानता के अधिकार को वैदिक-धर्म कहाँ तक स्वीकार करता है, उसके लिए विवाह संस्कार का सप्तपदी प्रकरण ध्यान देने योग्य है, सप्तपदी की सात प्रतिज्ञाओं में अन्तिम और सप्तम प्रतिज्ञा है-

सरखे सप्तपदी भव....।

हम गृहस्थ जीवन में सखा=मित्र बनकर रहेंगे। किसी को भी "मैं बड़ा हूँ" यह कहना नहीं पड़ेगा। अत: दोनों एक दूसरे को अपने से बड़ा मानने की पहल करेंगे। ऐसा तभी संभव होगा, जब दोनों शिक्षित हों और दोनों समझदार हों। इस समझदारी की पराकाष्ठा में वैदिक नारी कहती है- मेरे पुत्र शत्रु पर विजय पाने वाले हैं। मेरी पुत्री भी उन्हीं के समान तेजस्विनी है। वह किसी का भी मुकाबला करने में समर्थ है। पति उसका प्रशंसक है-

मम पुत्रा: शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ में श्लोक उत्तम:।।

-धर्मवीर

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १४ मई २०१७ रविवार से २१ मई २०१७ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : २८ मई २०१७ रविवार से ०४ जून २०१७ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०

www.thearyasamaj.org

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। ४. पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

www.thearyasamaj.org

परमेश्वर व्यापक अन्तर्यामी परमैश्वर्यवान् यथार्थश्रोता

-डॉ. कृष्णपाल सिंह

उपप्रयन्तोऽअध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये।
आरेऽअस्मे च शृण्वते।।

-यजु. ३/११

प्रस्तुत मन्त्र का ऋषि गौतम है और देवता अग्नि=जगदीश्वर है। मन्त्र का विषय निरूपित करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि '**अथेश्वरेण स्वस्वरूपमुपदिश्यते**' अर्थात् इस मन्त्र में ईश्वर ने अपने स्वरूप का उपदेश किया है। ईश्वर का स्वरूप कैसा है? इस बात का ज्ञान हमें इस मन्त्र द्वारा होता है। मन्त्र में परमेश्वर को यथार्थ श्रोता कहा गया है। वह सबकी स्तुतियों, प्रार्थनाओं, याचनाओं को यथार्थरूप में सुनता है। यह विचारणीय है कि उसके सुनने के साधन क्या हैं और कैसे सुनता है? क्या ईश्वर को सुनने के साधन हम जीवात्माओं के समान श्रोत्रादि हैं? इसका सीधा उत्तर नहीं में है।

जीवात्माओं को तो शरीर, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ और अन्त:करण चतुष्टय प्राप्त हैं। उन्हीं के द्वारा जीवात्मा अपना सब व्यवहार सम्पादित करता है, परन्तु परमेश्वर को जीवात्मा जैसे शरीरादि की आवश्यकता नहीं है। वह तो इन साधनों के बिना सब कार्य बड़ी कुशलता से निष्पादित करता है, क्योंकि वह अशरीरी (निराकार), सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी तथा परमैश्वर्यवान् है। अब यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि परमेश्वर श्रोत्रादि साधन के बिना कैसे सुनता है? सुनना तो श्रोत्रेन्द्रिय से ही होता है, फिर श्रोत्रेन्द्रिय के बिना सुनना कैसे हो सकता है? इस आशंका का समाधान यह है कि वह व्यापक और सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् होने से सब कुछ देखता, सुनता, जानता है।

'**यत्तददृश्यम्**' इस मुण्डकोपनिषद् के वचन से यह विदित होता है कि वह अदृश्य, निराकारादि स्वरूप वाला है। महर्षि ने यह वचन ऋ. भा. भूमिका के वेद विषय विचार के अन्तर्गत उद्धृत किया है। वहाँ प्रकरण वेद और ईश्वर का है। इस वचन के साथ और भी अनेक वेद, शास्त्रों, उपनिषदों के प्रमाणों को प्रस्तुत किया है। मुण्डकोपनिषद् के इस वचन के अतिरिक्त अन्य सभी प्रमाणों का अर्थ संस्कृत एवं भाषाभाष्य में उपलब्ध होता है, परन्तु मुण्डकोपनिषद् के उद्धृत वचन का न तो संस्कृत में और न ही भाषाभाष्य में अर्थ मिलता है। सम्भवत: सुगमार्थ (सरलार्थ) होने से अर्थ नहीं किया होगा। ऐसा भूमिका में अन्यत्र भी दृष्टिगोचर होता है, जैसे ऋ. भा. भूमिका के सृष्टिविद्या विषय के अन्तर्गत '**न मृत्युरासीत्**' इत्यादि मन्त्र सुगमार्थ हैं इसलिये इनकी व्याख्या भी यहाँ नहीं करते, किन्तु भाष्य में करेंगे। अत: मुण्डकोपनिषद् के वचन को सरलार्थ (सुगमार्थ) मानकर वहाँ अर्थ न दिया होगा।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने उक्त मुण्डकोपनिषद् के वचन के अर्थ विषय में भावार्थ यथास्थान कोष्ठक के अन्दर बढ़ाते हुए लिखा है कि 'यत्तददृश्यम्' अर्थात् उस ब्रह्म का ज्ञानेन्द्रियों से ग्रहण नहीं होता, हस्त से पकड़ा नहीं जा सकता, उसका कोई गोत्र वा वर्ण नहीं, वह नेत्र और कर्णरहित है, उसके हाथ और पाँव नहीं, वह नित्य है, व्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सुसूक्ष्म है, नाशरहित है.....।

अतएव इस औपनिषदिक वचन से विदित होता है कि परमेश्वर निराकार, चक्षुरादि इन्द्रियरहित होने पर भी सबका दृष्टा, श्रोता है, क्योंकि वह सर्वगत अर्थात् सर्वत्र व्याप्त होने से सब कुछ देखता सुनता व जानता है। बृहदारण्यकोपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि हे गार्गी! उस अक्षर ब्रह्म के विषय में विद्वान् लोग कहते हैं कि वह 'अस्थूलम् अनणु.....अचक्षुम्.....अश्रोत्रम्'..... इत्यादि विशेषणयुक्त है। अचक्षुकम् का अभिप्राय यह है कि वह अविनाशी, सर्वज्ञ अक्षर ब्रह्म चक्षुरादि इन्द्रियों से भिन्न होने से 'अचक्षुकम्' कहा है। वह सर्वगत (व्यापक) होने से बिना चक्षु के सब कुछ देखता है। चक्षु का अर्थ पंचमहायज्ञ विधि में लिखा है कि

'एष एवैतेषां प्रकाशकलात् बाह्याभ्यन्तरयो:
चक्षु:''चक्षु:''सर्वदृक्'

अर्थात् वह परमात्मा बाहर और अन्दर सबका द्रष्टा है। विश्वतश्चक्षु: पद का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द ने

www.thearyasamaj.org

लिखा है कि '**सर्वस्मिञ्जगति चक्षुर्दर्शनं यस्य सः**' अर्थात् सब जगत् पर चक्षु-दृष्टि रखने वाला है।

परमेश्वर का कर्तृत्वः- सत्यार्थ प्रकाश में परमेश्वर के कर्तृत्व को समझाते हुए उन्होंने लिखा है कि

पूर्व.- जब परमेश्वर के श्रोत्र, नेत्र आदि इन्द्रियाँ नहीं है, फिर वह इन्द्रियों का काम कैसे कर सकता है?

उत्तर-अपाणिपादो जवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रं पुरुषं पुराणम्।।

यह उपनिषद् (श्वेता ३-१९) का वचन है। परमेश्वर के हाथ नहीं, परन्तु अपने शक्तिरूप हाथ से सब रचन, ग्रहण करता, पग नहीं, परन्तु व्यापक होने से सब अधिक वेगवान्, चक्षु का गोलक नहीं, परन्तु सबको यथावत् देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बात सुनता, अन्तःकरण नहीं परन्तु सब जगत् को जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई भी नहीं। उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सबमें पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। वह इन्द्रियों और अन्तःकरण से होने वाले काम अपने सामर्थ्य से करता है।

वह ब्रह्म अश्रोत्र है। अक्षर, ब्रह्म, श्रोत्र-भिन्न है। तुलसीदास ने उक्त वचन का काव्यानुवाद करते हुए कहा है कि '**बिनु पग चलै सुनै बिनु काना**' प्रकृत वेदमन्त्र तो यह भाव '**शृण्वते**' पद से अभिव्यक्त कर रहा है कि विज्ञान स्वरूप, सबका अन्तर्यामी, व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर सबके अन्दर-बाहर व्याप्त हो रहा है। उसकी व्याप्ति के बिना कोई वस्तु नहीं है। अग्निस्वरूप परमेश्वर सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने से सबको देखता, जानता व सुनता है। इसलिये सब मनुष्यों को वेदमन्त्रों द्वारा उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करनी चाहिये।

वर्तमान समय में पाखण्ड का बोलबाला है। ईश्वर की उपासना में भी ढोंग चल रहा है। जो अविद्वान् व अयोगी हैं, वे लोग ही ईश्वर की पूजा (उपासना) आदि का मूर्ति रचकर प्रपंच करते हुए भोली जनता का पाखण्ड से द्रव्यहरण कर रहे हैं। इसी प्रकार यज्ञादि में भी नाना प्रकार का आडम्बर (ढोंग) का बाहुल्य हो रहा है। अवैदिक कृत्यों का समाज में बहुत प्रचार होता जा रहा है। यज्ञों में वेदमन्त्रों के स्थान पर मनुष्य रचित ग्रन्थों के श्लोकों, वाक्यों को पढ़कर आहुतियाँ दी जा रही हैं। इस प्रकार यज्ञीय पाखण्ड फैल रहा है। यजुर्वेद का यह मन्त्र यह बतला रहा है कि यज्ञीय सब शुभकर्म वेद-मन्त्रों के द्वारा ही सम्पादित करने चाहिएँ।

महर्षि दयानन्दकृत मन्त्रार्थः

(अध्वरम्) क्रियामय यज्ञ को (उप प्रयन्तः) उत्तमरीति से सम्पादित (निष्पादित) करते हुए और जानते हुए हम लोग (अस्मे) हमारे (आरे) दूर और (च) चकार से समीप भी (शृण्वते) यथार्थ सत्यासत्य को सुनने वाले (अग्नये) विज्ञानस्वरूप अन्तर्यामी जगदीश्वर के लिये (मन्त्रम्) विज्ञान के निमित्त वेदमन्त्रों को (वोचेम) उच्चारण करें। अर्थात् वेदमन्त्रों से जगदीश्वर की स्तुति करें।

भावार्थः- मनुष्यों को वेदमन्त्रों के साथ ईश्वर की स्तुति का यज्ञानुष्ठान करके एवं जो ईश्वर अन्दर और बाहर व्यापक होकर सब सुन रहा है, उससे डरकर अधर्म करने की कभी इच्छा भी न करें। जब मनुष्य इस ईश्वर को जानता है, तब यह उसके समीपस्थ तथा जब इसको नहीं जानता, तब दूरस्थ होता है, ऐसा समझें।

ईश्वरस्वरूप दर्शनः- प्रस्तुत मन्त्र का देवता अग्नि=जगदीश्वर है। परमेश्वर अग्नि के समान सर्वत्र सबके अन्दर और बाहर व्यापक हो रहा है। इसी कारण उसको अन्तर्यामी कहा जाता है। विज्ञानस्वरूप होने के कारण वह सबकी सुनता व सब कुछ जानता है। इस कारण उससे डरकर अधर्म, पापाचरण कभी न करना चाहिए। जब मनुष्य ईश्वर को अच्छी प्रकार जानता है, तब वह उसके समीप होता है और जब ईश्वर के स्वरूप को नहीं जानता अथवा ईश्वर को नहीं जानता, तब वह उससे दूर होता है।

विशिष्ट पद विचारः- १. आरेः- आचार्य यास्क ने इस पद को निघण्टु ३/३६ में 'दूर' नामों में पढ़ा है। इस कारण महर्षि ने इस पद का अर्थ 'दूर' किया है।

२. अध्वरः- निरुक्त शास्त्र में यास्काचार्य ने इस 'अध्वरम्' पद की निरुक्ति करते हुए लिखा है कि

'**अध्वर इति यज्ञनाम ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः**'

अर्थात् 'अध्वर' यह यज्ञ नाम है। जिसका अर्थ हिंसा-रहित कर्म है। चारों वेदों में यज्ञ के पर्याय अथवा कहीं-कहीं विशेषण के रूप में अध्वर पद का प्रयोग पाया जाता है।

www.thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धागम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

www.thearyasamaj.org

हिन्दू जाति के रोग का वास्तविक कारण क्या है?

-भाई परमानन्द

उच्च सिद्धान्त तथा उसके मानने वालों का 'आचरण'- ये दो विभिन्न बातें हैं। मनुष्य की उन्नति और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके सिद्धान्त और आचरण में कहाँ तक समता पाई जाती है। जब तक यह समता रहती है, वह उन्नति करता है, जब मनुष्य के सिद्धान्त और आचरण में विषमता की खाई गहरी हो जाती है, तब अवनति आरम्भ हो जाती है। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि उसका लक्ष्य सदा ऊँचे सिद्धान्तों पर रहता है, परन्तु जब तक उसके आचरण में दृढ़ता नहीं होती, वह उन (सिद्धान्तों) की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है, परन्तु संसार को वह यही दिखाना चाहता है कि उन सिद्धान्तों का पालन कर रहा है। इस प्रकार मानव समाज में एक बड़ा रोग उत्पन्न हो जाता है। धार्मिक परिभाषा में इसे ही 'पाखंड' कहते हैं। जब कोई जाति या राष्ट्र इस रोग से घिर जाता है तो उसकी उन्नति के सब द्वार बन्द हो जाते हैं और उसके पतन को रोकना असाध्य रोग-सा असम्भव हो जाता है।

हमारे देश में एक प्राचीन प्रथा थी कि जब कोई व्यक्ति 'उपनिषद्' आदि उच्च विज्ञान का जिज्ञासु होता था, तो पहले उसके 'अधिकारी' होने का निश्चय किया जाता था। 'अधिकारी' का प्रश्न बड़ा आवश्यक और पवित्र है। कई बार इसे तुच्छ-सी बात समझा जाता है, परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि 'अधिकारी' 'अनधिकारी' का प्रश्न प्राकृतिक सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल है। एक बच्चा चार बरस का है। उसको अपने साथी की साधारण-सी चेष्टायें की बड़ी मधुर अनुभव होती हैं। इनकी विचारशक्ति परस्पर समान है, इसलिये वे परस्पर मिलना और बातें करना चाहते हैं। गेंद को एक स्थान से उठाया और दूसरे स्थान पर फैंक दिया। यह काम उन्हें बहुत वीरतापूर्ण प्रतीत होता है। दो-चार बरस पश्चात् इसी गेंद जैसी तुच्छ बातों से उनकी रुचि हट जाती है। अब वे रेत या पत्थरों के छोटे-छोटे मकान बनाने में रुचि दिखाते हैं, ठीकरों और कंकरों से वे खेलना चाहते हैं। और ऐसे खेलों में वे इतने लीन रहते हैं कि घर और माँ-बाप का ध्यान उन्हें नहीं रहता। फिर कुछ बरस पश्चात् उनकी रुचि शारीरिक खेलों की ओर हो जाती है और पुराने खेलों को अब वे बेहूदा बताने लगते हैं।। युवावस्था में उन्हें गृहस्थ की समझ उत्पन्न हो जाती है और अब सांसारिक कार्यों में उलझ जाते हैं। धीरे-धीरे उनके मन में इस संसार से विराग और धर्म में प्रवृत्ति का आविर्भाव होता है और त्याग व बलिदान के सिद्धान्तों को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रत्येक सिद्धान्त को समझने के लिये 'अधिकारी' होना आवश्यक है। आज की किसी भी सभा में-चाहे वह धार्मिक हो या राजनैतिक, ९० प्रतिशत श्रोताओं को वक्ता की बातों में रस नहीं आता। बच्चों या बच्चों के से स्वभाव वाले बड़े-बूढ़ों को भी वही बात पसन्द आती है, जिस पर लोग हँसें या तालियाँ पीट दें, अतएव अनधिकारी के सन्मुख ऊँचे सिद्धान्तों का वर्णन करना भी प्राय: हानिकारक होता है।

जब किसी जाति या राष्ट्र में उन्नति की अभिलाषा उत्पन्न हो तो इसको कार्य रूप में परिणत करने का प्रथम आवश्यक साधन उसके व्यक्तियों के आचरण की दृढ़ता है। चरित्र जितना अधिक उच्च और भला होगा, उतनी ही शीघ्रता से उच्च और भले विचार बद्धमूल होंगे। 'चरित्र' के खेत को भली भाँति तैयार किये बिना उच्च विचार रूपी बीज बिखेरना, ऊसर भूमि में बीज फैंकने के समान ही व्यर्थ होगा। उच्च विचारों की शिक्षा देने के साथ-साथ आचरण और चरित्र को ऊँचा रखने का विचार अवश्य होना चाहिये, अन्यथा चरित्र के भ्रष्ट होने के साथ-साथ यदि उच्च विचारों की बातें ही रहीं तो 'पाखंड' का भयानक रोग लग जाना स्वाभाविक हो जायेगा।

यह पाखंड हिन्दुओं में कैसे उत्पन्न हुआ और किस प्रकार भीतर-ही-भीतर दीमक की भाँति यह हिन्दू समाज को खोखला कर रहा है-यह बात में यहाँ दो-तीन उदाहरणों से स्पष्ट करता हूँ। 'तपस्या' का अर्थ आजकल की भाषा में नियन्त्रित किया जा सकता है, लेकिन जिस युग में हिन्दू

www.thearyasamaj.org

जाति के पुरुषों ने 'तपस्या' को जीवन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था, वे इसके महत्त्व को जानते हुए यह भी समझते थे कि जिन लोगों को इसका उपदेश दिया जा रहा है, वे भी इसके महत्त्व को समझते हैं और इन्द्रिय दमन व मन के वशीकरण को आचरण में लाना 'तपस्या' का लक्ष्य समझते हैं। समय आया कि जब लोग इस तप को कुछ से कुछ समझने लगे और अब तप इसलिये नहीं किया जाता कि अपने मन को वश में करना है, अपितु इसलिये कि संसार को दिखा सकें कि हम 'बड़े तपस्वी' हैं। आग की धूनी लगाकर बैठ गये। कभी एक हाथ ऊँचा उठा लिया, कभी दूसरा और लोगों में प्रसिद्ध कर दिया कि हम बड़े तपस्वी हैं। 'तप' सिद्धान्त रूप में बहुत ऊँचा सिद्धान्त है, परन्तु यह जिन लोगों के लिये है, उनका आचरण गिर गया। 'सिद्धान्त' और 'आचरण' में विषमता होने के कारण पाखण्ड आरम्भ हो गया और आज हजारों-लाखों स्त्री-पुरुष इस पाखंड के शिकार हैं। 'त्याग' को ही लीजिये। 'त्याग' के उच्च सिद्धान्त पर आचरण करने के स्थान पर आज लाखों व्यक्तियों ने इसलिये घर-बार छोड़ रखा है कि वे गृहस्थ-जीवन की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकते। वे त्यागियों का बाना धारण कर दूसरों को ठगने का काम कर रहे हैं। कितनों ही ने न केवल सांसारिक इच्छाओं का त्याग नहीं किया, अपितु इनकी पूर्ति के लिये प्रत्येक अनुचित उपाय का सहारा किया है। जाति की पतितावस्था में 'त्याग' का ऊँचा आदर्श एक भारी पाखंड के रूप में रहता है।

देश के लिये बलिदान का आदर्श भी उच्च आदर्श है, परन्तु यदि देशभक्त कहलाने वाले व्यक्ति इसके सिद्धान्त के आचरण में इतने गिर जायें कि वे अपने से भिन्न व विरुद्ध सम्मति रखने वाले व्यक्ति को सम्मति प्रगट करने की स्वतन्त्रता भी न दें, ऐसी देशभक्ति एक प्रकार से व्यवसाय रूपी देशभक्ति है। कई बार ये लोग रुपया उड़ा लेते हैं और फिर इस बात का प्रचार करते हैं कि संसार में कोई भी व्यक्ति रुपये के लालच से नहीं बच सकता, इसलिये जो व्यक्ति इनसे असहमत रहता हो, उसे भी वे अपने ही समान रुपये के लालच में फँसा हुआ बताते हैं। ऐसी अवस्था में देशभक्ति की भावना एक पाखंड का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार अनाथालय, विधवा आश्रम आदि सब परोपकार और सर्व साधारण की भलाई के कार्यों के नाम पर आज जो रुपया एकत्र होता है, वह सब चरित्र-बल न होने के कारण धोखे की टट्टी बने हुए हैं। 'निर्वाण' या 'मुक्ति' प्राप्त करने की भावना भी उच्च आदर्श है, परन्तु आज चरित्र-बल न होने से चरित्रहीन व्यक्तियों ने इसी 'निर्वाण' और 'मुक्ति' के नाम पर सैकड़ों अड्डे बना रखे हैं और लाखों नर-नारी इनके फंदे में फँस कर भी गर्व करते हैं।

यदि मुझसे कोई पूछे कि हिन्दू जाति की निर्बलता और उसके पतन का वास्तविक कारण क्या है? तो मेरा एक ही उत्तर होगा कि इस रोग का वास्तविक कारण यह ढोंग है। हिन्दुओं में प्रचलित इस 'ढोंग' से यह भी प्रमाणित होता है कि किसी युग में हिन्दू जाति का चरित्र और आचरण बहुत ऊँचा था और इसीलिये उन्हें ऊँचे आदर्श की शिक्षा दी जाती थी, परन्तु पीछे से घटना क्रम के वश हिन्दू जाति का आचरण गिरता गया और 'सिद्धान्त' शास्त्रों में सुरक्षित रहने के कारण ऊँचे ही बने रहे। व्यक्ति इन सिद्धान्तों के अनुकूल आचरण न रख सके, फिर भी उनकी यह इच्छा बनी रही कि संसार यह समझे कि उनका जीवन उन्हीं ऊँचे आदर्शों के अनुसार है। इस प्रकार 'सिद्धान्त और आचरण' अथवा 'आदर्श' और 'चरित्र' में विभिन्नता हो जाने के कारण 'दिखावा' या 'ढोंग' का रोग लग गया। इस समय यह 'ढोंग' दीमक के समान जाति की जड़ों में लगा हुआ है। इस जाति के उत्थान का यत्न करने की इच्छा रखने वाले के लिये आवश्यक है कि वह पहले इस 'पाखंड वृत्ति' को निकाल फेंके। यदि हम अपने आचरण या चरित्र को ऊँचा नहीं बना सकते तो उच्च आदर्शों का लोभ त्याग कर अपने आचरणों के अनुसार ही आदर्श को अपना लक्ष्य बनायें।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। -महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

www.thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA. AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

अविद्या को दूर करना ही देशोन्नति का उपाय है

- सत्यवीर शास्त्री

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

- (यजु. ४०/१४)

साधारण संस्कृत भाषा का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी इस वेदमन्त्र के सामान्य अर्थ को समझ सकता है।

अर्थ-जो विद्वान् विद्या और अविद्या को साथ-साथ जानता है, वह महान् आत्मा, अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से अमृत (मोक्ष) सुख को प्राप्त कर लेता है, परन्तु चिन्तन इस विषय का है कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती तथा आर्यसमाज तथा वैदिक-धर्मी विद्वानों के सिद्धान्तानुसार विद्या से सुख और अविद्या से दु:ख की प्राप्ति होती है और "जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही मानना" विद्या है, इसके विपरीत "जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा न मानना" अविद्या है।

महर्षि पतञ्जलि ने भी 'योगदर्शन' में विद्या का लक्षण बताते हुए कहा है-

अनित्याशुचिदु:खानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या

अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, दु:ख को सुख और जड़ को चेतन आत्मा या परमात्मा मानना अविद्या है। इसके विपरीत मानना अर्थात् अनित्य को अनित्य, नित्य को नित्य, अपवित्र को अपवित्र, पवित्र को पवित्र, दु:ख को दु:ख, सुख को सुख, जड़ पदार्थ को जड़ एवं चेतन आत्मा व परमात्मा को चेतन मानना विद्या कहलाती है। व्याख्या के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति यह मानता है कि यह भौतिक शरीर या पंचभूतों से निर्मित ब्रह्माण्ड ऐसा ही था, ऐसा ही है और ऐसा ही रहेगा- यह नास्तिकवादियों की अविद्या नहीं है तो और क्या है? यक्ष के प्रश्न के उत्तर में धर्मराज युधिष्ठिर ने ठीक ही उत्तर दिया है-

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयं, शेषा:
स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यत: परम्।

प्रतिदिन हम देख रहे हैं कि प्राणी मृत्यु का ग्रास बनते जा रहे हैं, फिर भी सबसे अधिक आश्चर्य यह है कि शेष बचे प्राणियों (चिन्तनशील मानव) को यह विश्वास नहीं हो रहा कि एक दिन हमको भी मृत्यु का ग्रास बनना पड़ेगा। इससे बड़ी अविद्या और क्या हो सकती है? यदि यह भौतिक शरीर ऐसा ही था और ऐसा ही रहेगा तो जिन माता-पिता ने हमें उत्पन्न किया, पालन-पोषण किया, वे माता-पिता, दादा-दादी, दयानन्द, श्रद्धानन्द, राम और कृष्ण हमें छोड़कर क्यों चले गये?

पतञ्जलि ऋषि ने अविद्या का दूसरा लक्षण अशुचि को शुचि मानना अर्थात् अपवित्र को पवित्र मानना कहा है। वास्तव में ऋषि जी ने बात तो सत्य ही कही है, लेकिन शास्त्रों ने तो इस शरीर की उपमा राम की प्यारी नगरी अयोध्या से की है, यथा-

'अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या'

इस शरीर रूपी देवताओं की सुन्दर नगरी में नौ द्वार हैं तथा इसकी रक्षा हेतु अष्ट (आठ) चक्र लगे हुए हैं। कवियों ने इसकी सुन्दरता का वर्णन करते हुए अपनी कलम ही तोड़ दी है। इस शरीररूपी अयोध्या के मुख्य द्वार मुख की उपमा चन्द्रमा से की है। इसके दूसरे द्वार नेत्रों की उपमा कमलनयन कमल के फूल की पँखुड़ियों से की है। तीसरे, मुख पर होठों की उपमा गुलाब के फूल की पंखुड़ियों से की है। चौथे, नाक की तुलना सुन्दर पक्षी तोते की नाक से की है। नर और मादा एक-दूसरे के साथ ऐसे समाहित हो जाते हैं कि स्वयं को भूल जाते हैं। इसी प्रकार सांसारिक भौतिक धन, ऐश्वर्य, महल, अटारी के लिये तथा उपरोक्त सुन्दर शरीर रूपी अयोध्या के पोषण के लिए प्राणी, प्राणी की हत्या कर रहा है। आज इस स्वार्थसिद्धि के लिए मानव जिस गोमाता के दुग्ध से अपने तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करता है, उसी के खून, मांस का भी स्वाद ले रहा है।

अब उस शरीर रूपी अयोध्या का दूसरा रूप भी देखें। जिस मुख की तुलना चन्द्रमा से की गई है, उस मुख से क्या निकलता है? जिन नेत्रों की तुलना कमल की पंखुड़ियों से की गई है, प्रात:काल उन नेत्रों से कौन-सा

www.thearyasamaj.org

मल निकलता है? जिस नाक की तुलना तोते की नाक से की है, उससे क्या निकलता है? शरीर के प्रत्येक रोम से पसीने के रूप में क्या निकलता है? गुह्य इन्द्रियों से क्या निकलता है? इन सभी मलों को नाम लेने मात्र से मानव को घृणा होती है। इसके उपरान्त भी इस अशुचि, अपवित्र शरीर को पवित्र मानकर इसके पोषणार्थ मानव प्राणियों की ही नहीं, मानवों की भी हत्या कर हाड़-मांस का व्यापार करता है, जबकि इस शरीर ने एक दिन साथ छोड़ना है। जिन भौतिक पदार्थों का हम संग्रह कर रहे हैं, उन्हें हमारे साथ चलना नहीं है, फिर मानव ऐसा क्यों कर रहा है? इसी का नाम तो अविद्या है तथा जानते हुए भी न जानना है।

तीसरा, ऋषि पतञ्जलि ने अविद्या का लक्षण दु:ख को सुख मानना बताया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दु:ख के कारणों में मानव सुख की इच्छा से फँसता है। कामवासना-जो दु:ख का कारण है, उसको सुख का कारण समझकर रावण ने सीता का हरण किया। कामवासना रूपी दु:ख के कारण को सुख मानने के कारण ही रावण स्वर्ण नगरी लंका सहित विनाश को प्राप्त हुआ। संयोगिता के मोह में फँसकर पृथ्वीराज स्वयं नष्ट हो गया तथा सम्पूर्ण भारत को लगभग ग्यारह सौ वर्षों तक गुलाम कर गया। क्रोध के वशीभूत होकर दुर्योधन ने महाभारत के युद्ध का सूत्रपात किया, जिसके परिणाम को आज तक राष्ट्र भुगत रहा है। लोभरूपी दु:ख को सुख मानने के कारण घर-बार, जमीन-जायदाद के लोभ में आज भाई-भाई की हत्या कर रहा है। पुत्र पिता का हत्यारा बना हुआ है। भाई बहन के मुकदमे चले हुए हैं। दु:ख को सुख मानने वाली अविद्या ने मानव का ही पतन नहीं किया, अपितु राष्ट्र को भी भयंकर कालग्रस्त किया हुआ है।

चौथा-'अनात्मसु आत्मख्यातिरविद्या' कहा है, अर्थात् अनात्म जड़ भौतिक पत्थर मूर्ति को चेतन आत्मा अथवा परमात्मा मानना अविद्या का चौथा लक्षण कहा है। इस प्रकार माता-पिता तथा ईश्वर की जड़, पत्थर मूर्ति बनाकर पूजना, उनके किये गये उपकारों के प्रति भयंकर कृतघ्नता है, जिसका कोई भी प्रायश्चित्त नहीं हो सकता है, क्योंकि आत्मा व परमात्मा जड़-पदार्थ के बने हुए नहीं है।

आत्मा का लक्षण- आत्मा का लक्षण बताते हुए न्यायदर्शनकार मुनि ने कहा है कि

'सुखदु:खेच्छाद्वेषप्रयत्नज्ञानानि आत्मनो लिङ्गम्'

जो सुख-दु:ख को अनुभव करता हो, जिसमें इच्छा, राग, द्वेष, प्रयत्न तथा ज्ञान हो, ये लक्षण आत्मा के होते हैं। बहुत से व्यक्ति यह कहेंगे कि सुख-दु:ख का अनुभव शरीर करता है। इच्छा, राग, द्वेष, प्रयत्न और ज्ञान ये भी शरीर के ही लक्षण हैं, परन्तु उनका यह कथन तर्क एवं विज्ञान की कसौटी में नहीं आता, न ही इसका कोई प्रमाण है।

श्रुति, उपनिषद् तथा दर्शनों के प्रमाण आत्मा के लिये तो अनेक प्राप्त हो जायेंगे, जैसे उदाहरण के लिये एक प्रमाण यहाँ प्रस्तुत करते हैं-

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति:।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

– केनोपनिषद्

जो आँख से नहीं देखता, जिसके कारण से आँख देखती है, वही ब्रह्म (अध्यात्म) है।

अन्यच्च **'पराञ्चिखानि व्यतृणत् स्वयंभू:'** (कठोपनिषद्)। परमात्मा ने इस शरीर के पुतले में काट-काटकर पाँच छेद बनाए हैं, जिसमें से ज्ञान अन्दर आता है। ये पाँच छेद वाली पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ स्वयं कुछ नहीं करतीं, इन छेदों (इन्द्रियों) के भीतर बैठा (आत्मा) जो झाँक रहा है, वही सब ज्ञान प्राप्त करता है। आँखें खुली हों, परन्तु देखने वाला कहीं अन्यत्र मग्न हो तो आँखें खुली होने पर भी नहीं देखतीं, कान खुले होने पर भी नहीं सुनते।

इस शरीर में जो सुन्दरता, ओज, कान्ति आदि दिखाई देती हैं, वह भी आत्मा के कारण ही दिखाई देती हैं। जब आत्मा शरीर को छोड़कर निकल जाती है, तब न तो आँखें देखने का कार्य करती है, न कान सुन सकते है। पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ जड़ हो जाती हैं। शरीर का ओज व कान्ति नष्ट हो जाती है। इस शरीर से कोसों दूर तक दुर्गन्ध आने लग जाती है, अत: मूर्ति जड़ पदार्थ की होती है, चेतन आत्मा की नहीं।

परमात्मा का लक्षण- क्लेषकर्मविपाकाश-यैरपरामृष्ट:पुरुषविशेष ईश्वर:। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश-मानव के जीवन में ये पाँच क्लेश हैं। इन क्लेशों से ईश्वर अछूता है, दूर है। चारों प्रकार की अविद्या

www.thearyasamaj.org

का वर्णन तो ऊपर कर ही चुके हैं।

अस्मिता- ज्ञान को प्राप्त करने वाला जीवात्मा तथा ज्ञान को आत्मा जिस बुद्धिरूपी साधन से प्राप्त करता है, उन दोनों को एक मानना अस्मिता नामक क्लेश है।

राग- सुख भोगने पर पुन: सुख भोगने की तृष्णा राग नामक क्लेश है।

द्वेष- दु:ख भोगने के उपरान्त उसके प्रति क्रोध, रोष द्वेष नामक क्लेश है।

अभिनिवेश- पूर्वजन्मों के संस्कारों के वश मैं मृत्यु को प्राप्त नहीं होऊँ, यह दु:ख सभी प्राणियों की तरह शब्द ज्ञानी विद्वानों को भी होता है, जिसे अभिनिवेश नामक क्लेश कहते हैं। ये पाँच क्लेश परमात्मा को नहीं छूते। उसके अन्दर नहीं आते।

कर्म- कर्म तीन प्रकार के होते हैं, जिन्हें सामान्य व्यक्ति करते हैं- सत्, असत् और मिश्रित, अर्थात् शुभ-अशुभ व मिले-जुले, पुण्य, पाप व पाप-पुण्य से मिले-जुले। इन तीनों प्रकार के कर्मों तथा इनके फलों से ईश्वर अछूता होता है। परमात्मा आत्मा से भिन्न है। आत्मा पुरुष है तो परमात्मा पुरुषविशेष ईश्वर है। परमात्मा कभी भी क्लेश, कर्म आदि के निकट नहीं आता। जीव क्लेश तथा तीनों प्रकार के कर्मों के सम्पर्क में आते रहते हैं और छूटते रहते हैं।

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्- योगदर्शनकार बताते हैं कि ईश्वर के समान तथा उससे अधिक किसी का ज्ञान नहीं है, अत: वह सर्वज्ञ है, जबकि जीवात्मा अल्पज्ञ तथा प्रकृति जड़ है। ईश्वर पूर्व समय के गुरुओं, ऋषियों, महर्षियों का भी गुरु है, क्योंकि वह तीनों कालों में एकरस रहता है। उसका जन्म-मरण नहीं होता। सृष्टि के आदि तथा पूर्व सृष्टियों में भी ईश्वर ने ही ऋषियों के हृदय में वेद का ज्ञान दिया है, अत: ईश्वर ही पूर्व के सभी गुरुओं, ऋषियों, महर्षियों का गुरु है और रहेगा।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्- इस ब्रह्माण्ड में, सृष्टि में जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है, उसके कण-कण में ईश्वर का निवास उसी प्रकार है, जिस प्रकार दूध के एक-एक कण में घृत समाया हुआ होता है अथवा यह कहा जाये- जिस प्रकार फूल में सुगन्ध का वास होता है, अर्थात् वह एकदेशीय नहीं, सर्वव्यापक विभु है।

'अकायमव्रणम्' (यजु. ४०/४) वह परमपिता परमेश्वर निराकार शरीर रहित बिना नस-नाड़ियों वाला है।

'न तस्य प्रतिमास्ति' (यजु. ३२/३) उस ईश्वर की कोई प्रतिमा अर्थात् मूर्ति नहीं है।

'स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्' वह ईश्वर ही पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा तथा तारागण आदि लोक-लोकान्तरों को धारण किये हुए है।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति

इसी ईश्वर के प्रकाश को लेकर ये सब सूर्य, चन्द्र, तारे और बिजली आदि प्रकाशित होते हैं। यदि ईश्वर इनको प्रकाश न दे तो ये कुछ भी प्रकाश नहीं कर सकते। इनके अन्दर जो भी प्रकाश है, वह उनका अपना नहीं, यह प्रकाश परमात्मा का दिया हुआ ही है। जैसे सभी व्यक्ति जानते हैं कि घड़ी में अपनी गति नहीं है, किसी के द्वारा चाबी भरकर गति दी गई है, अत: इस ब्रह्माण्ड में जो गति दिखाई दे रही है, वह उस परमात्मा की दी हुई है।

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'- जिस प्रकार आत्मा इस शरीर को गति दिये हुये है, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में जो गति दिखाई दे रही है, वह उस परमपिता परमेश्वर की ही दी हुई है।

अत: जड़ अनात्म को चेतन आत्मा अथवा परमात्मा मानना अविद्या का चौथा लक्षण है। इस अविद्या के चौथे लक्षण ने व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को बहुत बड़ी हानि पहुँचाई है, जिसकी पूर्ति होना संभव नहीं है।

जैसा कि महर्षि पतञ्जलि ने योगशास्त्र में कहा है-

'विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्'

विपर्यय मिथ्या (विपरीत) ज्ञान को कहते हैं। जैसे अँधेरे में पड़ी रज्जू (रस्सी) को साँप मान लेने से वह साँप नहीं हो सकती, इसी प्रकार जीवित माता-पिता का अपमान कर उनकी मूर्ति बना, भोग लगा, पूजा करने से माता-पिता का प्यार व सम्पत्ति प्राप्त नहीं हो सकती, न ही ऐसा व्यक्ति कभी भी जन्म-जन्मान्तरों तक मोक्ष सुख के मार्ग का अनुगामी ही हो सकता है। उस परम कृपालु ईश्वर की दया के लिये महर्षि दयानन्द के बताये आर्यसमाज के दूसरे नियम के स्वरूप वाले ईश्वर की आराधना ही करनी आवश्यक है।

शेष भाग अगले अंक में....

www.thearyasamaj.org

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. बैंक **सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. **बैंक बचत खाता (Savings) संख्या**-091104000057530 **बैंक का नाम**-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

www.thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - १२७

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- ''जिज्ञासा-समाधान'' में एक जिज्ञासा का हल चाहिए। हवन करते हैं तो अन्त में बलिवैश्वदेवयज्ञ में पके चावल भात की दस आहुतियाँ चढ़ाते हैं। कहीं-कहीं भात न होने के कारण फल या प्रसाद की ही आहुतियाँ दे देते हैं और कहीं-कहीं सिर्फ घी की दस आहुतियाँ चढ़ा देते हैं। बलिवैश्वदेवयज्ञ तो प्रतिशाम में करना चाहिए। वर्तमान जगत् में कम घी होता है। आपकी राय क्या है?

- सोनालाल नेमधारी

जिज्ञासा २- महर्षि मनु द्वारा लिखित भूतयज्ञ का मन्त्र-

''शुनां च पतितानां.....पापरोगीणाम्।
वायसानों.....भुवि।।''

को अर्थसहित पढ़ा। आर्य गुटका में लिखित अर्थ के अनुसार कुत्ता, पतित, चांण्डाल, पापरोगी, काक के स्थान पर कोयल, चाण्डाल के स्थान पर महात्मा इत्यादि को महत्त्व नहीं दिया। उन सब कुत्ता, पतित वगैरह का उस समय समाज में क्या स्थान था? वे किस प्रकार से अधिक उपयोगी थे या उपयोगी समझे जाते थे? हमारे वेद-शास्त्रों के अनुसार चाण्डाल, पतित, पापरोगी, काक का वास्तविक अर्थ क्या है। क्योंकि आधुनिक समाज में इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

- डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता

समाधान १- बलिवैश्वदेवयज्ञ गृहस्थाश्रमी को अवश्य करना चाहिए। यह यज्ञ पाकशाला की अग्नि में करना होता है। इसके दो भाग हैं- एक अग्नि में आहुति देना, दूसरा कुछ प्राणी विशेष के लिए भोजन में से भाग निकालकर उनको देना। जो अग्नि में आहुति दी जाती हैं, वे आहुतियाँ घर में बने भोजन में से दी जाती हैं। इसके लिए महर्षि लिखते हैं-

यदन्नं पक्वमक्षारलवणं भवेत्तेनैव
बलिवैश्वदेवकर्म कार्य्यम्।

- ऋ.भा.भू.।

जो पका हुआ, क्षार और लवण से रहित अन्न है, उसकी आहुति देवें। यह बलिवैश्वदेवयज्ञ पके अन्न से ही करने का विधान है। इस विषय में महर्षि संस्कारविधि में भी लिखते हैं-''.....घृतमिश्रित भात की, यदि भात न बना हो तो क्षार और लवणान्न को छोड़ के जो कुछ पाक में बना हो, उसकी दश आहुति करें।'' यहाँ मुख्य रूप से भात की आहुति देने को कहा है और यदि भात न हो तो दूसरा विकल्प अन्य दूसरा पका हुआ अन्न कहा है।

बलिवैश्वदेवयज्ञ को श्रद्धा से करने वाला व्यक्ति ऋषि के अनुसार भात बनायेगा या बनवायेगा, तब आहुति देगा अथवा अन्य मिष्ट अन्न की आहुति देगा, यह ऋषि की मान्यता के अनुसार आदर्श रीति है। हाँ, कभी ऐसी परिस्थिति है कि कोई पक्व अन्न है ही नहीं और हम बलिवैश्वदेवयज्ञ करना चाहते हैं तो घी की आहुति भी दी जा सकती है, ऐसा करने से लाभ ही होगा।

आपने कहा ''भात न होने पर फल या प्रसाद की आहुति दे देते हैं।'' इस विषय में हमने ऋषि का मन्तव्य रख दिया है।

यह यज्ञ प्रतिदिन प्रातः करना होता है, प्रतिशाम नहीं। हाँ, यदि किसी कारणवश प्रातः नहीं कर पाये तो सायं किया जा सकता है। ये कहना कि ''वर्तमान जगत् में घी कम होता है'' उचित नहीं, क्योंकि जैसे पहले घी का उत्पादन होता था, आज भी हो रहा है। यदि हम यज्ञ करना चाहते हैं, यज्ञ के प्रति श्रद्धा है तो घी का उत्पादन बढ़ा लेंगे, प्राप्त कर ही लेंगे। अस्तु।

बलिवैश्वदेवयज्ञ के विषय में थोड़ा और लिखते हैं। वेद व ऋषियों ने इस यज्ञ का वर्णन किया है। महर्षि मनु कहते हैं-

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृहेऽग्नौ विधिपूर्वकम्।
आभ्यः कुर्यात् देवाताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम्।।

ब्राह्मण एवं द्विज व्यक्ति पाकशाला की अग्नि विधिपूर्वक सिद्ध हुए बलिवैश्वदेवयज्ञ के भाग वाले भोजन का प्रतिदिन ईश्वरीय दिव्यगुणों के चिंतनपूर्वक आहुति देकर हवन करे।

www.thearyasamaj.org

अहरहर्बलिमित्ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्रे।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम।।

- अथर्व. १९.५५.७

यह अथर्ववेद का मन्त्र भी बलिवैश्वदेवयज्ञ-विषयक आहुति देने का निर्देश कर रहा है। आहुति देने वाला यह बलिवैश्वदेवयज्ञ का प्रथम भाग है।

समाधान २- बलिवैश्वदेवयज्ञ का दूसरा भाग असहाय प्राणियों के लिए अपने भोजन में से कुछ भाग निकालकर उनको देना है। महर्षि मनु लिखते हैं-

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।।

- मनु. ३.९२

अर्थात् कुत्तों, कंगालों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिए भी छः भाग अलग-अलग बाँट के दे देना और उनकी प्रसन्नता करना अर्थात् सब प्राणियों को मनुष्यों से सुख होना चाहिए। ऋ.भा.भू.

महर्षि मनु ने ये जो प्राणी गिनाये हैं, ये व कुछ अन्य भी मनुष्यों के आश्रित रहते हैं। आपने कहा कुत्ते के स्थान पर गाय क्यों नहीं? यहाँ गाय का निषेध भी नहीं है। दूसरी बात, गाय को जितनी सरलता से चारा आदि मिल जाता है, उतनी सरलता से ग्राम्य या गली के कुत्तों को नहीं मिलता। इस प्रकार के प्राणी मनुष्यों पर आश्रित रहते हैं, इसलिए कुत्ते का कथन है। कोयल का भोजन प्रायः जंगली होता है, वह कौवे की भाँति घर का भोजन नहीं करती और यहाँ कौवा कहने से कोयल आदि अन्य पक्षियों का निषेध भी नहीं है, कौवा तो उपलक्षण मात्र है। ऐसे ही पतित और अन्यों की बात जानें।

पतित का तात्पर्य कंगाल आदि से है। जो कंगाल है, उनका भरण-पोषण बलिवैश्वदेवयज्ञ के द्वारा गृहस्थ लोग करें। कुष्ठ आदि रोगयुक्त असहाय जो मनुष्य हैं, उनको भोजन आदि कराना श्रेष्ठकर्म ही कहलायेगा। रही बात इनके स्थान पर महात्मा आदि की, तो इनके लिए ऋषियों ने अतिथियज्ञ का पृथक् विधान कर रखा है। इनका आदर सत्कार उस यज्ञ के माध्यम से होता ही जाता है।

इनके जैसे पहले अर्थ थे, वैसे आज भी हैं। कौवा कौवा ही है, कोई और अर्थ इसका नहीं है। चाण्डाल, जो श्मशान भूमि आदि में सेवाकार्य करता था। पतित से कंगाल असहाय आदि और पापरोगी अर्थात् कुष्ठरोग आदि से ग्रसित व्यक्ति। इनको सहयोग, सहायता करना, भोजन आदि से प्रसन्न करना बलिवैश्वदेवयज्ञ का दूसरा भाग कहलाता है। अलम्।

परोपकारी के सम्बन्ध में घोषणा

प्रकाशन - परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

संपादक	-	दिनेश चन्द्र शर्मा	**मुद्रक का नाम**	-	श्री मोहनलाल तँवर,
नागरिकता	-	भारतीय	**पता**	-	वैदिक यन्त्रालय,
पता	-	केसरगंज, अजमेर			केसरगंज, अजमेर
प्रकाशक	-	दिनेश चन्द्र शर्मा	**प्रकाशन अवधि**	-	पाक्षिक
नागरिकता	-	भारतीय			
पता	-	संयुक्त मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर			

मैं, दिनेश चन्द्र शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

फरवरी २०१७ **प्रकाशक : दिनेश चन्द्र शर्मा**

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ जनवरी २०१७ तक)

१. श्री कश्मीरीलाल सिंघल, मुक्तसर २. श्री मदनमोहन कथुरिया, नई दिल्ली ३. श्री ओमप्रकाश लढ्ढा, अजमेर ४. श्री नरेशकुमार, करनाल ५. श्री विनोद कुमार गर्ग, सिरसा ६. श्री जसपाल सिंह, यमुनानगर ७. स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ८. श्री आशीष कुमार व श्रीमती मनीषा, नई दिल्ली ९. श्री विशाल तँवर, नई दिल्ली १०. श्री गोविन्द प्रसाद आर्य, गंगापुर सिटी ११. श्री यशपाल, जयपुर १२. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला छावनी १३. श्री अमरचन्द व श्रीमती कौशल्या माहेश्वरी, अजमेर १४. सुश्री आशिकी नवाल, अजमेर १५. श्री मुकुटबिहारी, जयपुर १६. वेद विद्या प्रसार संस्थान, जयपुर १७. श्री सुशील भाटिया, नई दिल्ली १८. श्री आनन्दपाल सिंह, टोंक १९. श्रीमती सुमन आर्या, मधुबनी २०. श्रीमती सीता देवी, अजमेर २१. श्रीमती रामदेवी तनेजा, नई दिल्ली २२. श्री रनधीर सिंह धूल व श्रीमती संतोष धूल, सोनीपत २३. श्री तेजवीरसिंह, नई दिल्ली २४. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ जनवरी २०१७ तक)

१. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर २. श्री देवदत्त तनेजा, अजमेर ३. श्री रामजीलाल अरोड़ा, अजमेर ४. श्रीमती संतोष अरोड़ा, अजमेर ५. श्रीमती अदिति कपूर, अजमेर ६. श्री उमेशचन्द त्यागी, अजमेर ७. स्व. श्री रोशनलाल शर्मा, अजमेर ८. श्री नाथूलाल काकाणी, अजमेर ९. श्री मदनमोहन कथुरिया, नईदिल्ली १०. माता कौशल्या, अजमेर ११. श्री गोवर्धन प्रसाद खण्डेलवाल, अजमेर १२. श्री सुरेश खण्डेलवाल, अजमेर १३. श्री महेश खण्डेलवाल, अजमेर १४. श्री कैलाशचन्द्र गुप्ता, अजमेर १५. मै. बेबी चप्पल, अजमेर १६. मै. मीना फैशन, अजमेर १७. मै. एम.टी. ट्रेडर्स, अजमेर १८. श्री मुरलीधर, अजमेर १९. श्रीमती पार्वती देवी व सुशीला देवी, अजमेर २०. मै. सेन्चूरी स्टोर प्रा. लि., अजमेर २१. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर २२. श्री कन्हैयालाल, अजमेर २३. श्रीमती इन्दिरा खण्डेलवाल, इन्दौर २४. श्रीमती सुन्दर देवी, अजमेर २५. श्री रामरतन विजयवर्गीय, अजमेर २६. श्री अंतरिक्ष विजयवर्गीय, अजमेर २७. दीपिका वर्मा, अजमेर २८. श्री ओमप्रकाश राव, अजमेर २९. श्री सुशील कुमार गोयल, अजमेर ३०. श्री भुवनेशचन्द्र, जयपुर ३१. श्री विजय कुमार अग्रवाल, मुरादाबाद ३२. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट ३३. श्री महेन्द्र व श्रीमती शिवानी माहेश्वरी, अजमेर ३४. श्री सँवरलाल, अजमेर ३५. श्री रंगप्पा संकार्षा, अजमेर ३६. श्री अशोक प्रमोद आर्य, बागपत ३७. श्री अभिमन्यु धाकड़, रोहतक ३८. श्रीमती प्रेमलता अजमेर ३९. श्री भारतभूषण मुद्गल, करतारपुरा ४०. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ४१. श्रीमती कान्ता अग्रवाल, अजमेर ४२. श्री दिनेशचन्द्र शर्मा, जयपुर ४३. श्री मयंक शर्मा, अजमेर ४४. श्री रमेशचन्द्र शर्मा, अजमेर ४५. श्रीमती शीला शर्मा, अजमेर ४६. श्री देवेन्द्र सिंह सिसोदिया, अजमेर ४७. श्री सुरेन्द्र आर्य, पानीपत ४८. श्री तजेन्द्र, रेवाड़ी ४९. श्रीमती सूर्याकुमारी माहेश्वरी, अजमेर ५०. श्री रामरतन विजयवर्गीय, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

www.thearyasamaj.org

पुस्तक - परिचय

पुस्तक का नाम - रामायण की विशेषताएँ
लेखक- स्वामी ब्रह्ममुनि
प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली ११०००६
मूल्य- ३० रू. **पृष्ठ संख्या**- १०४

रामायण भारतीय आर्यसमाज में आर्यजाति के लिए महाप्राण का कार्य कर रही है। वाल्मीकि रामायण का स्थान देश, जाति, समाज के लिए आदर्श रूप है। इसके बाद तुलसीकृत रामायण का महत्त्व भी घर-घर तक पहुँच गया है। प्रत्येक भारतीय के घर में आस्था का प्रतीक है। महत्त्व है रामायण का। कारण स्पष्ट है-धार्मिक महत्त्व, ईश्वर पर अटूट विश्वास, नैतिकता का आदर्श पाठ प्राप्य है। रामायण के पात्रों का महत्त्व मर्यादा से परिपूर्ण है। पात्रों में राम, भरत, लक्ष्मण, सीता, दशरथ, कौशल्या व सुमित्रा आदि का आदर्श झलकता है।

ब्रह्ममुनि के शब्दों में भरत का आदर्श, भरत का स्थान ऊँचा है। भरत में मर्यादावत्ता, धार्मिकता, राम के प्रति स्नेह और ज्येष्ठानुवृत्ति अत्यधिक थी। जिस भरत को राज्य दिलाने के लिए कैकयी ने राम को वनवास दिलाया, पुन: राम के वनवास शोक में दशरथ का प्राणान्त हो जाने पर मन्त्रियों ने राजसिंहासन पर बैठाने के लिए राम के वनवास आदि वृतान्त को गुप्त रख पिता दशरथ की ओर से भरत को मातुल गृह से बुलाया, पुन: भरत के अयोध्या पहुँचने पर मन्त्रियों ने उसे राम के वनवास और पिता के देहान्त को सुनाकर राजसिंहासन पर बैठने की अनुमति दी तो वह भरत राज्यप्राप्ति में प्रसन्न नहीं होता, किन्तु निम्न विलाप करता हुआ अचेत हो भूमि पर गिर पड़ता है-

अभिषेक्ष्यति रामं तु राजा यज्ञं तु यक्ष्यते।
इत्यहं कृतसंकल्पो दृष्टो यात्रा मयासिषम्।।

- वा-रा. अयो. ७२/२७

मेरे पिता राजा दशरथ राम का राज्याभिषेक करने के हेतु राजसूय यज्ञ करेंगे, यह संकल्प मन में रखकर प्रसन्न हो मैं चला था। हाय! यह क्या हुआ? यह है भरत के सौजन्य का प्रथम दृश्य!

आज राज्यलिप्सा अथवा स्व-अधिकार के लिए क्या-क्या षड़यन्त्र कर बैठते हैं। अनेक आदर्श रूप सभी पात्रों में अलौकिक रूप से मिलते हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक वर्णन, सामाजिक, पारिभाषिक शब्द और मुहावरे, रामायण काल की विशेष वस्तुएँ, राष्ट्र तथा राष्ट्रीय वर्णन, देश, कला, कौशल और विज्ञान विद्या, नगर उद्यान की कला, आयुध, हस्तशिल्प, यन्त्रयान, विमान-विज्ञान आदि पर महत्त्वपूर्ण विचार प्रदान किए हैं।

पाठकों के लिए मुनि जी ने महत्त्वपूर्ण अनुकूल सामग्री प्रस्तुत की है। इसका आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्त्व है, अत: जिज्ञासु चिन्तकों, वृद्ध, युवा, बालकों के लिए भी मूल्यवान् सामग्री है, उसे हमें जीवन का आधार बनाना चाहिए। लेखक का चिन्तन वर्तमान व भावी समाज के लिए है। शिक्षाओं को जीवन में ग्रहण करें। यही अपेक्षा। - **देवमुनि**

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ **आर्यवीर शिविर**, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०
२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ **आर्य वीराङ्गना शिविर**, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०
३. १८ से २५ जून, २०१७- **योग-साधना शिविर**, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

www.thearyasamaj.org

पाठकों के विचार

-स्वामी जिलानन्द

महर्षि दयानन्द द्वारा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा गया सृष्टि सम्वत् निम्नलिखित है- सृष्टि सम्वत्=१९६०८५२९७६ वर्ष वेद और जगत् की उत्पत्ति में हो गये हैं। यह सम्वत् ७७ वाँ वर्त रहा है। ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं तथा २७ चर्तुयुगी पूर्ण हो गयी तथा २८ वीं चर्तुयुगी का ७ वाँ मनु वर्त रहा है। इसमें त्रेता, द्वापर, सतयुग तथा ९७६ वर्ष कलयुग के बीत चुके हैं। तथा ७७ वाँ वर्ष वर्त रहा है ७२ चर्तुयुगीयों का मन्वन्तर होता है।

गणना इस प्रकार है-

६ मनु = ३०६७२०००० × ६ = १८४०३२००००
सतयुग= = १७२८०००
त्रेता= = १२९६०००
द्वापर= = ८६४०००
कलयुग= = ९७६
कुल योग = १९६०८५२९७६

वर्षों का भोग हो चुका तथा (२३३३२२७०२४) वर्षों का भोग बाकी है।

कुल सृष्टि का भोग = २३३३२२७०२४
= १९६०८५२९७६
योग = ४२९४०८००००
सृष्टि के बनने व बिगड़ने का = २५९२००००
= ४३२०००००००

उपरोक्त मत ऋषि दयानन्द का है जो सभी आर्यों को मान्य है।

इसके विरुद्ध और लेख मान्य नहीं है। सूर्यसिद्धान्त के मध्यमाधिकार के २४ वें श्लोक के विज्ञान भाष्य में लिखा है कि सूर्य सिद्धान्त का यह मत है कि कल्प के आदि में सृष्टि की रचना नहीं थी, इसके लिए ब्रह्मा को २७०६४००० सौरवर्ष का समय लगाना पड़ा। दूसरे आर्यभट्ट का भी यही मत है।

ब्रह्मगुप्त भास्कराचार्य इत्यादि के गणित से ज्ञान पड़ता है कि इनको यह मत मान्य नहीं था, क्योंकि इन्होंने ग्रहों का स्थान जानने के लिए कल्प के आदि से गणना की है, परन्तु सूर्यसिद्धान्त ने सृष्टि के तैयार होने में जितना समय लगा है, उसको ग्रह गणित में छोड़ दिया है। उपरोक्त से सिद्ध होता है कि सूर्य सिद्धान्त तथा दूसरे आर्यभट्ट व महर्षि दयानन्द की सृष्टि सिद्धान्त गणना मानव के उत्पन्न होने से लेकर मानव के समाप्त होने तक की गणना है। सृष्टि के बनने व बिगड़ने की गणना नहीं जोड़ी है जो इस प्रकार है-

= २७०६४००० बनने का समय
= ८८५६००० बिगड़ने का समय
योग= २५९२०००० समय नहीं जोड़ा

इससे सूर्य सिद्धान्त में सन्धि और संध्यास दोनों मिलकर १२ वें भाग के बराबर पहले से ही युगों में जोड़ दी गई है। जो सन्धि = १७२८००० वर्षों की सन्धि जोड़ी गई है, वह निराधार है। यदि कोई आधार है तो सन्धि पहले ही चारों युगों में जुड चुकी, जो प्रत्येक युग के आरम्भ में और अन्त में होती है। इससे महर्षि द्वारा बताया गया सृष्टि सम्वत् १६०८५३११७ वाँ वर्ष ही चल रहा है। यही मान्य है। इति।

www.thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१५ से ३१ जनवरी २०१७

इन दिनों प्रात:कालीन यज्ञोपरान्त कुछ महत्वपूर्ण चर्चाएं हुई:- १. क्या संध्या-उपासना करते समय एक ही स्थान पर धारणा लगाना चाहिये या अलग-अलग स्थानों पर? **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि नये योगाभ्यासी और रोगी व्यक्ति धारणा नहीं लगा पाते हैं। अलग-अलग स्थानों पर धारणा लगाने से मन भले ही स्थिर न हो लेकिन धारणा लगने का संस्कार तो बनता ही है। एक स्थान में धारणा न लग सके और चित्त अलग-अलग स्थानों पर जाये तो इसे योग में बाधक नहीं मानना चाहिये। अंगस्पर्श के मंत्रों का पाठ करते समय अंगों में बल और पवित्रता की कामना करते हुए मंत्रों के अनुसार यदि मन शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों पर जा रहा है तो यह भी ठीक है। इससे योग में सहायता ही होगा। धारणा करना ध्यान और समाधि की प्राप्ति के लिए है। अभ्यास और वैराग्य से धारणा सुदृढ़ होती है। प्रत्याहार के द्वारा मन और इन्द्रियाँ बाहर के विषयों से हटकर भीतर शरीर के किसी स्थान पर ठहर जाते हैं। ईश्वर के किसी एक गुण का चिन्तन करते रहने पर ही मन एक स्थान पर रुका रहता है।

उपनिषदों का प्रमाण देते हुए **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि संध्या-उपासना और योगाभ्यास अलग-अलग है। योगाभ्यास में प्राणायाम आदि करना होता है, अत: एक स्थान पर धारणा लगाना संभव नहीं है। संध्या-उपासना करते समय जितने समय उपासना करना हो, मन और इन्द्रियों को रोककर चित्त को शरीर के एक ही स्थान पर विशेषकर हृदय में स्थिर रखना ही धारणा है। **ब्र. सत्यव्रत जी** ने कहा कि धारणा लगाने का उद्देश्य ईश्वर का चिन्तन करते हुए आनन्द प्राप्त करना है। यम-नियम का पालन, आसन, प्राणायाम से भी धारणा की क्रिया प्रभावित होती है। जो दीर्घकाल से योगाभ्यास कर रहा है, उसके लिए उपासना के पूरे समय तक शरीर के किसी एक स्थान पर धारणा, ध्यान, समाधि लगाना कठिन नहीं है। **ब्र. रविशंकर जी** ने कहा कि संध्या करते समय अंगस्पर्श आदि की क्रिया को योग के बहिरंग साधन जैसा ही समझना चाहिये और उपस्थान मंत्र आदि का पाठ करते समय धारणा को योग के अन्तरंग भाग समझना चाहिये। **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि शरीर के किसी भी स्थान में धारणा लगाकर ध्यान किया जा सकता है। ध्यान लग जाने पर धारणा गौण हो जाती है।

२. योगदर्शन के अनुसार चित्त की पाँच वृत्तियों- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति तथा भूमियों- क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध में क्या आपस में कोई सम्बन्ध है? इन दोनों के स्वरूप में क्या समानताएं एवं विषमताएं हैं? इनके नियंत्रण व परिवर्तन के उपाय समान हैं या भिन्न-भिन्न हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि चित्त में ज्ञानात्मक व्यापार होते हैं। **चित्त की पाँच वृत्तियाँ हैं- १. प्रमाण** अर्थात् प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाण, २. **विपर्यय** अर्थात् उल्टा ज्ञान, ३. **विकल्प** अर्थात् अर्थ का निश्चय न होना, ४. **निद्रा** अर्थात् सुषुप्ति और ५. **स्मृति** अर्थात् देखे, सुने, अनुभव किये पदार्थों का स्मरण होना आदि। **पाँच भूमियों में १. क्षिप्त**- इससे मन में बहुत अधिक चंचलता होती है। २. चित्त की **मूढ़** अवस्था में अत्यधिक जड़ता, आलस्य, प्रमाद रहता है। ३. **विक्षिप्त** अर्थात् अलग-अलग विषयों का ध्यान होना, किन्तु नियन्त्रण की स्थिति में रहना। ४. चित्त की **एकाग्र** भूमि से किसी एक द्रव्य, वस्तु, स्थान, क्रिया आदि में मन स्थिर रहता है। ५. **निरुद्ध** चित्त की सर्वोत्तम भूमि है, जिसमें आत्मा-परमात्मा में मन की स्थिति होती है। चित्त सत्वगुण प्रधान है, यद्यपि इसमें तीनों गुण रहते हैं। क्षिप्त अवस्था में रजोगुण के कारण मनुष्य ऐश्वर्य और शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि सांसारिक विषयों की इच्छा करता है। मूढ़ अवस्था में तमोगुण से अधर्म, अज्ञान, संसार में आसक्ति, अन्याय, विद्या और ऐश्वर्य की इच्छा न होना, मिथ्या ज्ञान आदि होता है। विक्षिप्त अवस्था में धर्म, सतोगुण, मोह का आवरण कम होना, ज्ञान प्राप्ति की इच्छा, सतर्क होना, गुणों का उत्कर्ष, वैराग्य होना आदि होते हैं। एकाग्र भूमि चित्त की ऊँची स्थिति है, इसमें सतोगुण की उच्च स्थिति के कारण सम्प्रज्ञात समाधि होती है। निरुद्ध अवस्था में असम्प्रज्ञात समाधि, अत्यन्त शुद्ध ज्ञान, पूर्ण विवेक, पूर्ण

www.thearyasamaj.org

वैराग्य होता है। जैसी चित्त की भूमि होती है वैसी वृत्ति होती है और जैसी चित्त की वृत्ति होती है वैसी भूमि होती है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। इन दोनों में वृत्ति मुख्य है। चित्त की वृत्ति से आरम्भ होकर भूमि का निर्माण होता है।

३. वर्तमान में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के चलाये रखने और उसे उपयोगी बनाने में क्या-क्या बाधायें हैं और उसका क्या समाधान है? जिन गुरुकुलों में आधुनिक शिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है क्या वे गुरुकुल माने जायें?

ब्र. भूदेव जी ने कहा कि वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति से व्याकरण, दर्शन आदि शास्त्र पढ़े हुए अधिकांश स्नातकों का भविष्य अंधकारमय है, क्योंकि इससे आध्यात्मिक उन्नति तो होती है, लेकिन सांसारिक जीवन जीने में सर्वप्रथम कठिनाई जीविका प्राप्ति की है। जो आधुनिक शिक्षा पद्धति से पढ़ रहे हैं वे अन्य विषयों की भी पढ़ाई करके कोई भी नौकरी, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग आदि कर सकते हैं। **ब्र. रामप्रसाद जी** ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को उपयोगी बनाने के लिये गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से पढ़े हुए विद्यार्थियों के लिए परीक्षा-पद्धति आवश्यक है। यदि गुरुकुल में परीक्षा की व्यवस्था न हो तो गुरुकुल में पढ़ते हुए बाहर कॉलेजों में परीक्षा देने की सुविधा हो। गुरुकुल में संस्कृत भाषा के साथ अन्य भाषाओं और लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होना चाहिये। गुरुकुलों में योग्य विद्वानों की नियुक्ति करके उन्हें उचित वेतन आदि दिये जायें। **ब्र. शिवनाथ जी** ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल सरकारी नौकरी करने की योग्यता प्राप्त करना मात्र नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कर्म से भी अच्छी जीविका प्राप्त होती है। शारीरिक, मानसिक विकास करते हुए आध्यात्मिक उन्नति करना मुख्य प्रयोजन है। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में पढ़ा हुआ स्नातक समाज और राष्ट्र को संगठित, विकसित करने में श्रेष्ठ योगदान कर सकता है। **ब्र. मनोज जी** ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति में पढ़ने से हमारा जीवन संस्कारित बनता है, सद्गुणों का विकास होता है। शरीर, मन और आत्मा को उत्तम बनाने का एकमात्र स्थान गुरुकुल ही है। गुरुकुल में आर्ष ग्रन्थों को मुख्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिये। आधुनिक पाठ्यक्रम गौण होना चाहिये।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में अथर्ववेद के १२.५.१.३ 'स्वधया परिहिता.....लोको निधनम्।' मन्त्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि इस लोक में जो भी पैदा हो गया है, उसका निधन होना ही है। यह संसार मरणधर्मा है। फिर भी व्यक्ति ऐसे रहता है जैसे कभी मरेगा ही नहीं। वेद के अनुसार श्रद्धा के ऊपर आरुढ़ होकर दक्ष हो जायें और सुरक्षित हो जायें। जो दक्ष नहीं है, वह सुरक्षित नहीं रहता।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि परमपिता परमेश्वर ने यह मानव जीवन सदैव अपनी उन्नति और शुभ कर्म करने के लिये दिया है। प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। मनुष्यों को विद्या प्राप्ति से विशेष सुख आनन्द और अविद्या से दु:ख प्राप्त होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्या की आवश्यकता होती है। शुद्ध विद्या से ही ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की व्यवस्था ठीक प्रकार से चलती है। चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आश्रम कहा गया है। गृहस्थ में अत्यन्त श्रम करते हुए भी सहनशील रहना चाहिये। जब गृहस्थ में उत्तम सन्तान का निर्माण किया जाता है तो वही ब्रह्मचर्य आश्रम में तप करते हुए विद्या ग्रहण करके सद्गृहस्थ बनते हैं।

गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम- इस अवसर पर परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी ने कहा कि पहले आज ही के दिन हमारे देश को सही अर्थों में स्वतन्त्रता मिली थी, जब हमारे देश का संविधान लागू हुआ था। वैसे तो १५ अगस्त १९४७ को ही अंग्रेजों ने सत्ता को सौंप दिया था लेकिन उस समय जो कानून था, वह उन्हीं विदेशियों का बनाया हुआ था। हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल हमारे द्वारा बनाये हुए कानून के अनुसार देश चलने लगा, तब हमें पूर्ण आजादी मिली।

ब्र. रविशंकर जी ने कहा कि चाहे स्वतन्त्रता दिवस हो या गणतन्त्र दिवस हो, हम अपने आप को देशप्रेम की भावनाओं से ओत-प्रोत करने की कोशिश करते हैं।

ब्र. सत्यव्रत जी ने कहा कि इस देश की स्वतन्त्रता के लिये लाखों देशभक्त क्रान्तिकारियों ने अपना बलिदान दिया। आज हमें विचार करना चाहिये कि क्या हम उनकी

www.thearyasamaj.org

आशाओं के अनुकूल देश का निर्माण कर रहे हैं?

* **आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

सम्पन्न कार्यक्रम:-

(क) १-२ फरवरी २०१७: श्री देवपाल जी के सौजन्य से ग्राम-लालूखेड़ी, मुजफ्फरनगर उ.प्र. में वैदिक प्रवचन।

(ख) ३,४,५ फरवरी २०१७: आर्यसमाज बालसमन्द, हिसार का वार्षिकोत्सव।

(ग) ७,८,९ फरवरी २०१७: ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र में यज्ञ।

(घ) १४,१५,१६ फरवरी २०१७: हेमन्त दुबे जी के घर पर ग्राम-जमानी, इटारसी में व्याख्यान।

आगामी कार्यक्रम:-

(क) १७-१८ फरवरी २०१७: रोजड़, गुजरात।

(ख) १८-२२ फरवरी २०१७: होशंगाबाद में श्री रामावतार के घर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ।

(ग) २३-२६ फरवरी २०१७: आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली।

(घ) २७, २८ फरवरी, १ मार्च २०१७: बांदीकुई में सामवेद पारायण यज्ञ।

पं. गणपति शर्मा विषयक नम्र निवदेन

जैसे प्रूफ़ पढ़ते-पढ़ते प्रूफ़ रीडर स्वयं भी कभी भ्रमित होकर अशुद्ध शब्द को शुद्ध समझने लगता है, ठीक इसी प्रकार अप्रामाणिक, मिथ्या इतिहास को सुन-सुनकर, पढ़कर इतिहास प्रेमी भी भ्रमित हो जाते हैं। पं. गणपति शर्मा जी के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में लिखा था कि उनके कश्मीर शास्त्रार्थ का जो समाचार पहले 'सद्धर्म प्रचारक' के आधार पर तड़प-झड़प में दिया था, वही प्रामाणिक व सत्य इतिहास है, तथापि कुछ और पढ़कर, खोजकर विस्तार से फिर एक लेख दिया जायेगा।

कार्याधिक्य होते हुए पर्याप्त नई सामग्री से राजस्थान के इस महान् तप:पूत विद्वान् पर शीघ्र लेख भी दूँगा। एक पुस्तक भी तैयार हो रही है। महाराजा प्रतापसिंह के समय कश्मीर शास्त्रार्थ का पूरा समाचार दिया जा रहा है। 'पूर्ण पुरुष' पुस्तक का वृत्तान्त भ्रामक व हास्यास्पद है। पाठक नये लेख की प्रतीक्षा करें। **- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें।

- मन्त्री

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

www.thearyasamaj.org

न्याय दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि गौतम**' द्वारा प्रणीत '**न्याय दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा १ मार्च २०१७ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ९-१० महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि हों तो कृपया सभा के पते पर भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। -**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६**

www.thearyasamaj.org

बुतपरस्ती का शुक्रिया

-पं. नारायणप्रसाद 'बेताब'

पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' उच्च कोटि के कवि, व्यंग्य लेखक, नाटककार थे, आर्यसमाज के प्रति निष्ठा इनके आत्मचरित्र में स्पष्ट झलकती है। मूर्तिपूजा पर लिखी गई आपकी यह कविता 'परोपकारी' में ही १९८३ में प्रकाशित हुई थी। इसकी उपयोगिता को देखते हुए, यह पुन: प्रकाशित की जा रही है। **-सम्पादक**

बुरा हाल तेरा है अय बुतपरस्ती।
कि मिलने को है खाक में तेरी हस्ती।
बुलन्दी से रुख हो गया है पस्ती।
नहूसत है जो तेरे मुँह पर बरस्ती।
नहीं काबिले कद्र फर्मान तेरा।
मगर मानता हूँ मैं अहसान तेरा।।१।।

बहुत दिन से अहकाम तेरे हैं रद्दी।
न कब्जे में बाकी है जागीर जद्दी।
तहत्तुक ने कर दी तेरी शान भद्दी।
गया हाथ से राज और राजगद्दी।
न सच्ची तौकीर रहती वह कब तक।
यह शहना जो उतरा हुआ नाम मरदक।।२।।

कहाँ है अब वह रौबे फर्मागुजारी।
कि महकूम भारत की भूमि थी सारी।
बस अब रह गई इतनी जागीरदारी।
कहीं एक खेत और कहीं एक क्यारी।
निशाने परस्तिश फक़त इस कदर है।
सफैदी सी कुछ दानए-माश पर है।।३।।

मुसाफिर के रास्ते में एक ख़ार थी तू।
इबादत की गर्दन पै तलवार थी तू।
हमेशा नक़ाबे-रुखे-यार थी तू।
तो दर्शन में पर्दे की दीवार थी तू।
तेरे लाख ऐबों से अब दूर हूँ मैं।
फक़त एक खूबी का मशकूर हूँ मैं।।४।।

सुन अय बुतपरस्ती अगर तू न होती।
तो मिलता न हमको वह अनमोल मोती।
चमक जिसकी थी जैसे सूरज की ज्योति।
न यूँ मादरे-शिर्क भी जान खोती।
शिवालय में जाता न फिर मूलशंकर।
ठहरते न यूँ संगे-माजूल शंकर।।५।।

जो उपवास होता न शिवरात्रि का।
न होती जो मन्दिर में शिवलिंग पूजा।
न पूजा में फल-फूल चढ़ता चढ़ावा।
निकलता न वह चाट चखने को चूहा।
किया जिसने साबित सरे लिंग चढ़कर।
खुदा को खुदा और पत्थर को पत्थर।।६।।

किया उसने झूँठा चढ़ावा वह सारा।
दिया ताव मूंछों पे और यह पुकारा।
करे तो कोई बाल बांका हमारा।
महादेव सुनते रहे दम न मारा।
यकीं था मगर मूलशंकर के दिल में।
कि जिन्दा न जायेगा चूहा यह बिल में।।७।।

अभी लेके तिरशूल निकलेंगे शंकर।
फटा चाहती है यह पिण्डी मुकर्रर।
जटा गंगधारी पिशाचों के अफ़सर।
इसे आज रख देंगे निश्चय कुचलकर।
सजा देंगे गुस्ताख को बात क्या है।
यह चूहा है चूहे की औकात क्या है।।८।।

मगर देर तक जब निकला न कोई।
महादेव ने कुछ न की चाराजोई।
खामोशी ने अफसोस सब बात खोई।
क़सीदे सरासर हुए याम्वा गोई।
उठी मूलशंकर के दिल में यह शंका।
बनी कैसे मिट्टी यह सोने की लंका।।९।।

जो भू: भुव: स्व: तप: नाम वाला।
'तप:' शब्द का भी निकाला दिवाला।
गज़ब है कि यूँ कान में तेल डाला।
कहाँ खो दिया दण्ड देने का आला।
महादेव पर पड़ गई ओस क्यूंकर।
ये बुत बनकें बैठे हैं अफसोस क्यूँकर।।१०।।

www.thearyasamaj.org

डरा एक चूहा भी जिससे न घर में।
बिठायेगा क्या रौब वह विश्वभर में।
मैं सुनता था शक्ति महा ईश्वर में।
मगर शून्य है यह तो मेरी नजर में।
फ़क़त एक पत्थर तराशा हुआ है।
जो अज्ञानियों का तमाशा हुआ है।।११।।

महादेव देवों में भी जो महा है।
यह हर्गिज नहीं है कोई दूसरा है।
कोई उस पे गालिब हो ताकत ही क्या है।
जो परमात्मा है वह सबसे बड़ा है।
वह क्या एक चूहे से मग़लूब होता।
उसी को जो मैं पूजता खूब होता।।१२।।

मुबारक हुआ इन ख्यालों का आना।
मुबारक वह शब थी मुबारक जमाना।
मुबारक हुआ यह चढ़ावा चढ़ाना।
मुबारक हुआ उस चूहे का खाना।
हुआ मुर्गे दिल नवासंजे वहदत।
खुला उस घड़ी से दरेगंजे वहदत।।१३।।

तबीअत वहीं मूलशंकर की बदली।
मिटे कुफ्र बस दिल से यह शर्त बदली।
कुल्हाड़ी पये नक्ले अतबारे-बदली।
हुई सर बसर शिर्क की दूर बदली।
जो सूरज ने सूरत निकाली घटा से।
बढ़ा मेहरे-तौहीद काली घटा से।।१४।।

पड़ा था जो एक कोयलों का जखीरा।
निकल आया उसमें से अनमोल हीरा।
समय ने पहाड़ों के टुकड़ों को चीरा।
तो हाथ आ गया बेशक़ीमत मुमीरा।
मिला हमको जुल्मात से आबे हैवां।
मिला उसकी हर बात से आबे हैवां।।१५।।

न मंजूर की जब बुतों की गुलामी।
रही फिर न कुछ मूलशंकर में खामी।
बने वो महर्षि दयानन्द स्वामी।
तरफदार हक से सिदाकत के हामी।
किया चश्मए फैज जारी जिन्होंने।
मुसीबत में सुन ली हमारी जिन्होंने।।१६।।

नये सर से भारत में हलचल मचा दी।
अविद्या की विद्या ने हस्ती मिटा दी।
जहाँ सामने आये वादी विवादी।
वहीं मुँह पे मुहरे-खामोशी लगा दी।
गज़ब धाक बैठी सरे अन्जूमन थी।
न कुछ मुशरिकों को मजाले सुखन थी।।१७।।

जो गिरते थे उनको ऋषि ने सम्भाला।
पड़े थे जो ग़ारों में उनको निकाला।
'यथेमां वाचम्' का देकर हवाला।
किया शूद्रों को भी अदना से आला।
मसावात का हक दिया मर्दों जन को।
निकम्मा न समझा किसी अज्वे तन को।।१८।।

मज़ाहिब हैं जितने भी हिन्दोस्तां में।
पड़ें बेखबर थे ये खाबें गरां में।
मगर था यह जादू ऋषि के बयां में।
खड़े हो गये कान सबके जहाँ में।
उड़ी भाप से जबकि हाँडी की चपनी।
तो हर एक को पड़ गई अपनी-अपनी।।१९।।

लगे कहने तौहीद के थे जो दुश्मन।
करो वेद से बुतपरस्ती का खण्डन।
किया 'तस्य प्रतिमा न अस्ति' का वर्णन।
किसी को रही फिर न कुछ ताबे गुफ़्तन।
ख़िज़ालत से सर दर गरीबां थे सारे।
न आँखें मिलाते थे ग़ैरत के मारे।।२०।।

बिलखती थी आफ़तजदा बाल विधवा।
न था दर्दे खामोश का कोई चारा।
सितम है सितम उम्रभर का रंडापा।
न हो तो कहाँ तक न हो 'भ्रूण' हत्या।
न माँ कोई बन सकती थी मारे डर के।
कि जंगल में फिंकते थे टुकड़े जिगर के।।२१।।

वह औलाद थी या कि जंजाल जी का।
नदामत से चेहरे का था रंग फीका।
जिन आँखों में पिनहां था रोना किसी का।
उन आँखों में पहुँचा न दामन ऋषि का।
दुआगो है अब ग़म फ़रामोश बेवा।
बची सौ गुनाहों से निर्दोष बेवा।।२२।।

www.thearyasamaj.org

किया तय अहम से अहम मरहलों को।
सिखाया यह 'बेताब' से पागलों को।
न बचपन की शादी है जेबां भलों को।
निचोड़ो कुचलकर न कच्चे फलों को।
जो है बीज कच्चा उगेगा न पौदा।
यह सौदा है पूरे खिसारे का सौदा।। २३।।

हुई थी यह एक वहशते खाम हमको।
सबब क्या कि हो खौफे अन्जाम हमको।
विरहमन समझते हैं जब आम हमको।
तो फिर नेक कर्मों से क्या काम हमको।
बड़ा नाज था बाप दादा के कुल पर।
जमाना है गिर्दाब में हम हैं पुल पर।। २४।।

मगर यह दयानन्द ने भेद खोला।
नहीं जन्म से कुछ बिरहमन का चोला।
सुख न यह है वेदों के कांटे में तोला।
अमल से है छोटा बड़ा या मंझोला।
जनेऊ बवक्ते बिलादत कहाँ था।
न बच्चों में कुछ शूद्रता का निशां था।। २५।।

यहाँ तक थे हम होशियारे जमाना।
कि भिजवाते रहते थे मुर्दो का खाना।
बड़े पेट थे या बड़ा डाकखाना।
किये पार्सल अक्सर उनसे रवाना।
जरा देखिये डाकियों का कलेजा।
जमीं का पुलन्दा फलक पर भी भेजा।। २६।।

रसीद आज तक भी किसी की न आई।
वह शय पाने वालों ने पाई न पाई।
बहुत खो चुके जब कि अपनी कमाई।
ऋषि ने बताया कि है यह ठगाई।
गया पार्सल यह तसल्ली है झूठी।
लुटेरों ने यह डाक रस्ते में लूटी।। २७।।

न था खौफ हमको गुनाह के अमल में।
समझते थे यह मैल सा है बग़ल में।
लगा लेंगे गोता जो गंगा के जल में।
तो हो जायेंगे दूर सब पाप पल में।
ऋषि ने कहा बक्को जर यों न खोना।
कि मुमकिन नहीं जीव को जल से धोना।। २८।।

हजारों किये ऐसे उपदेश हमको।
सताये न जिससे कोई क्लेश हमको।
नई जिन्दगी दी कमो-बेश हमको।
कहा यह बनाकर निकोकेश हमको।
निराकार निर्लेप परमात्मा है।
खुदा को मुजस्सम समझना खता है।। २९।।

बनाए जो तस्वीर बे सूद है वह।
यह महदूद और ग़ैर महदूद है वह
कहे बुत को बेताब माजूद है वह।
तो काफिर है मुशरिक है मरदूद है वह।
जो मूरत बनाई हुई है हमारी।
उसे कब सजावार है किर्दगारी ।। ३०।।

न बेताब था बुतपरस्ती पे माइल।
न थी बात मशकूर होने के क़ाबिल।
मगर इक अदा पर फिदा हो गया दिल।
हुआ जिससे मिन्नत कशे रम्जे-वातिल।
मुनासिब न था आज खामोश होना।
बुराई है अहसां-फरामोश होना।। ३१।।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ संख्या ६ का शेष भाग.....

धनिकास्तान् धनापहारार्थं गच्छन्तीति सेलगाश्चौराः। पाप कृतो हिंसा कारिणः। त्रिविधाः दुष्टाः पुरुषा वित्तवन्तं बहुधनोपेतं पुरुषमरण्यमध्ये गृहीत्वा कर्त्तमन्वस्य कश्मिंश्चिदन्ध कूपादि रूपे गर्त्तेतं प्रक्षिप्य तदीयं धनमपहृत्य द्रवन्ति पलायन्ते। एवमेवानभिज्ञा ऋत्विजो यजमानं नरक रूपं कर्त्तमन्वस्य नरकहेतो दुरनुष्ठानेऽवस्थाप्य दक्षिणारूपेण तदीयं द्रव्यमपहृत्य स्वगृहेषु गच्छन्ति। अनेन निदर्शनेन ऋत्विजामनुष्ठान परिज्ञानाभावं निन्दति।

डॉ. सुधाकर मालवीय कृत हिन्दी अनुवादः- इस प्रकार (अभिषेक प्रकार को या अनुष्ठान प्रकार को न जानने वाले ऋत्विज् जिस क्षत्रिय के लिए या जिस यजमान के लिए यजन करते हैं, तो वे उस क्षत्रिय वा यजमान का अपकर्ष भी करते हैं, जिस प्रकार नीच जाति के ये निषाद, चोर और (हिंसा करने वाले शिकारी आदि) पापी पुरुष बहुधन से युक्त पुरुष को अरण्य के मध्य पकड़कर (किसी अन्ध कूपादि) गड्ढे में फेंककर उसके धन का अपहरण करके पलायित हो जाते हैं, उसी प्रकार ये अनुष्ठान प्रकार से अनभिज्ञ ऋत्विज् लोग यजमान को नरकरूप (विधिहीन) अनुष्ठान में स्थापित करके दक्षिणारूपी उसके धन का अपहरण करके अपने घर चले जाते हैं।

आर्यसमाज के क्षेत्र में अनुष्ठीयमान यज्ञों में यह पहले प्रकार का विधिहीनता-रूपी दोष सर्वत्र रहता है। इस प्रकार हमारे ये यज्ञ तामसी कोटि के हो जाते हैं। हमारे ये पारायण-यज्ञ जहाँ से चलकर आर्यसमाज में आए हैं, वहाँ पूर्ण रीति से इनका विधि-विधान लिखा हुआ है। हमारे विद्वान् उसे देखना या उधर के तज्ज्ञ विद्वानों से सम्पर्क करना भी उचित नहीं समझते। हमारी स्थिति तो सन्त सुन्दरदास के कथनानुसार-

पढ़े के न बैठ्यो पास अक्षर बताय देतो,
बिनहु पढ़े ते कहो कैसे आवे पारसी।

इस पद्यांश जैसी है। संस्कार विधि यद्यपि हिन्दी भाषा में है, पर फिर भी इसे समझना आसान काम नहीं है। गुरुचरणों में बैठ, पढ़कर ही समझा जा सकता है। हमारा पुरोहित समुदाय ऐसा करना आवश्यक नहीं समझता तो फिर विधिपूर्वक अनुष्ठान कैसे हो सकते हैं और कैसे कर्मकाण्ड में एकरूपता आ सकती है।

ये वेद पारायण-यज्ञ (संहिता स्वाहाकार होम) जहाँ से हमने लिए हैं, वहाँ इनके अनुष्ठान के लिए विधिविधान का उल्लेख करते हुए अपने समय के ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौत और गृह्य सूत्रों के उद्भट विद्वान् स्वर्गीय श्री पं. अण्णा शास्त्री वारे (नासिक) अपने ग्रन्थ 'संहिता स्वाहाकार प्रयोग प्रदीप' में लिखते हैं कि-

'तत्र कात्यायनप्रणीतशुक्लयजुर्विधान सूत्रं, सर्वानुक्रमणिकां च अनुसृत्य संहितास्वाहाकार होमे प्रतिऋग्यजुर्मन्त्रे आदौ प्रणवः अन्ते स्वाहाकारश्च। मध्ये यथाम्नायं मन्त्रः। प्रणवस्य स्वाहाकारस्य च पृथक् विधानात् मन्त्रेण सह सन्ध्याभावः। मन्त्र मध्ये स्वाहाकारे सति तत्रैवाहुतिः पश्चान्मन्त्र समाप्तिः। न पुनर्मन्त्रान्ते स्वाहोच्चारणमाहुतिश्च।। - पृ. २४०

अर्थः- संहिता स्वाहाकार होम विषय में कात्यायन प्रणीत शुक्ल यजुर्विधान सूत्र और सर्वानुक्रमणिका का अनुसरण करते हुए संहिता स्वाहाकार होम में प्रत्येक ऋग्यजुर्मन्त्र के आदि में प्रणव (ओम्) तथा अन्त में स्वाहाकार, मध्य में संहिता में पढ़े अनुसार मन्त्र। मन्त्र और स्वाहाकार के पृथक् विधान होने से इनकी मन्त्र के साथ सन्धि नहीं होती। मन्त्र के बीच में स्वाहाकार आने पर वहीं आहुति देकर पश्चात् मन्त्र समाप्त करना चाहिए। फिर से मन्त्र के अन्त में स्वाहाकार का उच्चारण कर आहुति नहीं देनी चाहिये।

प्रणव और स्वाहाकार का मन्त्र से पृथक् विधान होने से मन्त्रान्त में ओम् स्वाहा उच्चारण कर आहुति देना नहीं बनता। कात्यायन भिन्न अन्य सभी ऋषि-महर्षियों का भी ऐसा ही मत है। उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत प्रमाण का अवलोकन कीजिए-

सर्व प्रायश्चित्तानि जुहुयात्
स्वाहाकारान्तैर्मन्त्रैर्न चेत् मन्त्रे पठितः।

- आश्वलायन श्रौतसूत्र १/११/१०

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

www.thearyasamaj.org

'जल्लीकट्टू का विरोध'-एक अन्तर्राष्ट्रीय षड़यन्त्र

-प्रभाकर

कुछ कार्य बाहर से देखने पर तो बड़े अच्छे और कल्याणकारी प्रतीत होते हैं, पर उनके पीछे छिपा स्वार्थ उतना ही भयावह होता है। हमारी दृष्टि केवल थोड़ा ही देख पाती है, पर उसकी जड़ें कहाँ तक हैं, ये शायद हम सोच भी नहीं पाते।

तमिलनाडु के पारम्परिक खेल 'जल्लीकट्टू' का एक गैर-सरकारी संस्था PETA द्वारा किया गया विरोध भी कुछ ऐसा ही है।

पहले इन गैर-सरकारी संस्थाओं (NGO) की पृष्ठभूमि और उनके उद्देश्य को समझ लें तो बाकि अपने आप समझ में आ जायेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देशों के बीच आगे बढ़ने की प्रतियोगिता रहती है। दूसरे देशों को पिछड़ा और गरीब बनाये रखने के लिये कुछ विकसित देश जिन तरीकों का उपयोग करते हैं, उनमें एक तरीका है-एन.जी.ओ.। बाहर से दिखने में ये संस्थायें समाज, पशु, मानव, प्रकृति की हितैषी लगती हैं, परन्तु इनका मूल उद्देश्य समाज और सरकारों को अस्थिर करना होता है, जिससे देश में कोई प्रगति का कार्य ना हो सके और वह देश वैश्विक मंच पर पिछड़ा बना रहे। प्राकृतिक संतुलन का मुखौटा ओढ़कर बांध न बनने देना, सड़कों उद्योगों का विरोध करना, पिछड़े दलित वर्ग को भड़काकर उन्हें देश के विरोध में खड़ा कर देना आदि इनके माध्यम होते हैं।

जल्लीकट्टू के विरोध के पीछे कितनी गहरा और दूरगामी षड़यन्त्र है, इसके बारे में जानना प्रत्येक भारतीय के लिये आवश्यक है।

क्या है 'जल्लीकट्टू'?- 'जल्लीकट्टू' भारतीय गायों की नस्लों का संवर्धन करने वाली एक प्रतियोगिता है। जैसे मनुष्यों में योग्यताओं को बढ़ाने के लिये कुश्ती आदि खेल होते हैं, ठीक वैसे ही। इस प्रथा में केवल भरतीय नस्लों को ही लिया जाता है। किसी समय इस खेल में ६ नस्लों को बैलों के लिया जाता था। अब एक प्रजाति 'अलामबादी' विलुप्त हो चुकी है, बाकी प्रजातियाँ भी विलुप्ति के कगार पर हैं। १९९० में कंगायम प्रजाति के १० लाख बैल थे, अब वह संख्या मात्र १५००० रह गई है। प्रतियोगिता में सभी पशुपालक अपने बलिष्ठ बैलों को लाते हैं। बैलों को बड़ी चारदीवारी में छोड़ दिया जाता है, फिर उन्हें नियन्त्रित करने का प्रयास किया जाता है, जिन बैलों को वश में नहीं किया जा सकता, उन्हें वंशवृद्धि के लिये प्रयोग किया जाता है। बाकि बैलों को खेती के कार्य में लिया जाता है। इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जाता है कि सबसे ताकतवर बैल ही गोधन की वृद्धि के लिये प्रयुक्त हो, जिससे होने वाला पशु भी बलिष्ठ, रोगों से लड़ने वाला और अधिक दूध देने वाला होता है। यह एक परम्परागत, व्यावहारिक तरीका है, जिससे किसान अच्छे जीन को सुरक्षित व देशी नस्ल की वृद्धि कर सकते हैं। किसानों को इस स्पर्धा से पशुओं का अच्छा मूल्य भी मिलता है। इस कारण भी यह प्रथा महत्त्वपूर्ण है। यदि यह प्रतियोगिता ना हो तो पशुपालकों का उत्साह गिरेगा, जिससे कि लोग पशु पालना, खरीदना कम कर देगें। फलस्वरूप गाय व बैलों का मूल्य कम हो जायेगा और इसका सीधा-सीधा लाभ कत्लखानों को मिलेगा।

२०११ में इस परम्परा पर तब विवाद शुरु हुआ, जब एक पशु अधिकार संस्था ने उच्चतम न्यायालय में 'जल्लीकट्टू' पर रोक लगाने की माँग की। उनकी अपील का आधार जानवरों के साथ क्रूरता का व्यवहार था। उच्चतम न्यायालय ने २०१४ में फैसला सुनाते हुए इस प्रथा पर रोक लगा दी।

'जल्लीकट्टू' के विरोध का अन्तर्राष्ट्रीय कारण- इस प्रथा के विरोध का कारण पशुओं पर होने वाली क्रूरता नहीं, बल्कि व्यापारिक स्वार्थ है।

गाय के दूध में दो प्रकार के Beta Casein प्रोटीन पाये जाते हैं- ए१ व ए२। अधिकतर लोग मानते हैं कि ए२ प्रोटीन ज्यादा लाभकारी है। भारत में देशी गाय की ३७ नस्लें हैं (१०० वर्ष पहले १५०० नस्लें थीं)। इनमें से ३६ में ए२ प्रोटीन पाया जाता है। माना जाता है कि ए१ प्रोटीन

www.thearyasamaj.org

दीर्घकालिक बीमारियों जैसे-टाइप १ डायबिटीज़ और ऑटिज्म को जन्म देता है। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी जो ए२ प्रोटीन वाले दूध का उत्पादन करती है, उसकी आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड में उपस्थिति है। इस कम्पनी के पास ए१/ए२ प्रोटीन वाले जीन के परीक्षण का पेटेंट है। समस्या यह है कि इसी कम्पनी के पास ए२ जीन वाले बैल से कृत्रिम गर्भाधान का पेटेंट भी है। उनके पास इस प्रयोग का पेटेंट भी है, जिससे ए२ जीन को प्रभावशाली बनाकर ए१ जीन को प्रमुख होने से रोका जा सकता है। अगर भारत की सभी देसी नस्लें नष्ट हो जायें, तब या तो हमें ए१ प्रोटीन वाला हानिकारक दूध पीना पड़ेगा या बहुत मूल्य देकर इस कम्पनी की पेटेंट तकनीक का उपयोग करके ए२ दूध प्राप्त करना पड़ेगा।

नियम के अनुसार यह पेटेंट सिर्फ एक प्रजाति 'बोस टॉरस' (Bos Taurus) पर ही लागू होता है। और 'बोस टॉरस' से भी शुद्ध प्रजाति 'बोस इण्डिकस' (Bos Indicus) तमिलनाडु की है, जो कि 'जल्लीकट्टू' में प्रयोग की जाती है, पर यह प्रजाति पेटेंट में नहीं आती। इसलिये जब तक यह प्रजाति सुरक्षित है, तब तक कम्पनी अपना व्यापार पूरी तरह भारत में फैलाने में असमर्थ है। इसके समाप्त होते ही ए२ प्रोटीन का दूध लेने के लिये हमें विदेशी कम्पनियों पर आश्रित होना पड़ेगा। यही समस्या तमिलनाडु के किसानों को परेशान कर रही है।

'जल्लीकट्टू' पर रोक लगने से पहले तमिलनाडु में गाय-बैल का अनुपात ४:१ था, परन्तु अब यह बढ़कर ८:१ हो गया है। इसके अतिरिक्त अब बैलों को कसाइयों को बेचा जा रहा है। इसलिये यह प्रथा देसी नस्ल के गाय-बैल के अनुपात को स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखती है, इससे देसी नस्ल को ही प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रथा का विरोध करने वाले 'पेटा' का मुख्य तर्क है कि इसमें पशुओं की पूँछ तोड़ना, घायल करना, शराब पिलाना, आदि क्रूरता की जाती है और कई बार पशु मर भी जाते हैं।

इस पर मदुरई निवासी श्री पंडीयन रंजीत (पशु-पालक) का कहना है कि वह पिछले २० वर्षों से इस प्रथा के लिये बैलों को तैयार कर रहे हैं। उन्होंने इस खेल में मनुष्यों को तो चोट खाते देखा है, पर बैलों को कभी नहीं। प्रतिभागियों और आयोजकों का ये कहना कि "यदि इस आयोजन में किसी पशु के खून की एक बूँद भी गिरती है तो खेल को रोक दिया जाता है" उनके पशुप्रेम का परिचायक है।

स्थानीय नेता व राज्य सरकार इस प्रथा की अनिवार्यता को देखते हुए इसके पक्ष में है, लेकिन केन्द्र और न्यायालय की मजबूरी क्या है-ये विचारणीय है।

ये कोई पहली घटना नहीं, इससे पहले भी मुम्बई में चलने वाली विक्टोरिया घोड़ा गाड़ियों पर भी प्रतिबन्ध इसी 'पेटा' द्वारा लगवाया गया था। मिर्जापुर का कालीन उद्योग, भारतीय सर्कस, फिरोजाबाद का चूड़ी उद्योग भी इन्हीं N.G.O. की भेंट चढ़ गया। भारत की भूमि में सदियों से उगाये जाने वाले बासमती चावल का पेटेंट आज अमेरिका के पास है। उत्तर प्रदेश में बैलों की दौड़ पर प्रतिबन्ध भी ऐसे ही षड्यन्त्रों का हिस्सा रहा है, आज वहाँ बैलों की कीमत नाममात्र की रह गई है। तर्क यही था-पशुओं पर अत्याचार।

विदेशों के दान और उनके इशारों पर चलने वाली इन संस्थाओं को पशुओं व समाज की इतनी ही चिन्ता है तो वह ईद जैसे हिंसक त्यौहार पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग क्यों नहीं करती? पशुओं को हलाल होते देख क्यों अपनी आँखें मूंद लेती है? सौन्दर्य प्रसाधनों के लिये निरीह जीवों को तड़पते वक्त उनकी चीख इन संस्थाओं को दिखाई नहीं देती। कत्लखानों में कटते छोटे-छोटे पशुओं के बच्चे इनके विरोध के दायरे में क्यों नहीं आते?

पशुहिंसा ना हो ये आवश्यक है, लेकिन उनके संवर्धन को हिंसा नाम देना कहाँ तक उचित है?

कमियाँ तो कहीं भी ढूँढी जा सकती हैं, आपत्ति कहीं भी हो सकती है। एक महिला जब प्रसव पीड़ा झेलती है तो उसे भी हिंसा घोषित किया जा सकता है। सैनिक सीमा पर खड़ा होकर जान को जोखिम में डालता है। एक मजदूर भवन निर्माण में जो मेहनत करता है, क्या उसे भी क्रूरता कहा जायेगा?

नहीं, क्योंकि ये सब अनिवार्य हैं, हित के लिये हैं। भारतीय संस्कृति की नींव अनिवार्यता पर टिकी है,

www.thearyasamaj.org

आवश्यकता व संतुलन ही उसका आधार है, विलासिता, हिंसा और उपद्रव नहीं। यहाँ का त्यौहार, हर खानपान, ऋतु, फसल, प्रकृति से अनिवार्यता से जुड़ा है, जिनका उद्देश्य व्यक्ति व समाज को उन्नति प्रदान करना है। दुनिया के हर कार्य में कष्ट हैं। अच्छाई है, तो कुछ समस्यायें भी हैं, पर हम हर कार्य को प्रतिबन्धित नहीं कर सकते। यदि कार्य का उद्देश्य व विधि सही है तो कुछ समस्याएं होते हुए भी कार्य सही होगा, क्योंकि समस्या और कार्य परस्पर साथी हैं, परन्तु यदि किसी कार्य का उद्देश्य गलत है तो उसकी दलीलें सही प्रतीत होते हुए भी वह कार्य गलत ही होगा। बाहर से अच्छा दिखने वाला यह कार्य समाज व राष्ट्र के लिये अहितकर ही होगा।

आर्यजगत् के समाचार

१. उत्तर-पूर्वाञ्चल विशाल जनजाति सम्मेलन- नागालैण्ड, अरुणाचल जाने हेतु अनुमति लेनी पड़ती थी। आज वहाँ भगवा ध्वज लहराता दिखाई दे रहा है। नागालैण्ड की जनजातियों में ९० प्रतिशत ईसाई बन गये हैं। वमासा में वमासाओं का बहुमत है। वहाँ शिक्षा के लिए विद्यालय की माँग हुई। जनजाति वैदिक सम्मेलन हुआ, उसमें धनसेरी (असम) से १० हजार से अधिक जनजाति के लोगों ने भाग लिया। असम में राज्यपाल श्री बनवारी लाल पुरोहित तथा एम.डी.एच. मसाले वाले ९४ वर्षीय श्री महाशय धर्मपाल जी ने भी भाग लिया। महाशय जी ने एम.डी.एच. डी.ए.वी. स्कूल खोला। महाशय धर्मपाल जी ने असम में कार्बी जनजाति के लिए बोकाजन में वैदिक विद्यालय की स्थापना की।

२. ऋषि बोधोत्सव- महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, जि. राजकोट, गुजरात में भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन २३ से २५ फरवरी २०१७ तक किया जा रहा है। कार्यक्रम में ऋग्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी, भजनोपदेशक श्रीमती अंजलि-करनाल, श्री सत्यपाल पथिक-अमृतसर, अध्यक्ष श्री पूनम सूरी, मुख्य अतिथि मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार श्री विजय रूपाणी, विशिष्ठ अतिथि श्री एच.आर. गन्धार, अध्यक्षता श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल आदि होंगे। इस कार्यक्रम में सभी आर्यजन परिवार एवं मित्रों सहित आमन्त्रित हैं।

३. संस्कृत शिविर- केरल के पालाघाट जिले में कारालमाना गाँव में आर्यसमाज वैलंझी ने गृहे-गृहे संस्कृत-गृहे-गृहे अग्निहोत्रम् की बड़ी गतिविधि प्रारम्भ की है। उक्त १० दिवसीय शिविर २ से १२ अप्रैल २०१७ तक लगाया जाएगा, जिसमें अपने घरों में अग्निहोत्र करने को प्रेरित किया जाएगा। वेद प्रचारकों की टीम बनाई गई, जो संस्कृत सम्भाषण शिविर लगायेगी व अवलोकन करेगी।

४. राष्ट्रीय बुद्धिजीवी सम्मेलन- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में राष्ट्रीय बुद्धिजीवी सम्मेलन का विशाल एवं भव्य आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्रप्रदेश-तेलंगाना, हैदराबाद द्वारा वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल कुन्दनबाग, बेगमपेट, हैदराबाद में दि. २ से ४ फरवरी २०१७ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

चुनाव समाचार

५. स्त्री आर्यसमाज रुड़की, उत्तराखण्ड के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती उर्मिला राठी, **मन्त्राणी**- श्रीमती बाला देवी आर्या, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती रागिनी मित्तल को चुना गया।

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

ब्र. रणजित् आर्य का 'स्व श्री कन्हैयालाल जी लोहिया, कडैल शत्रवृत्ति पुरस्कार' (६०,००० रुपये) से सम्मान
बाएँ से दाएँ ब्र. रणजित आर्य, श्री शत्रुघ्न आर्य, ठा. विक्रम सिंह एवं श्री राजेन्द्र विद्यालङ्कार

ब्र. वरुणदेव आर्य का 'श्रीमती सुगनीदेवी आर्ष ईनाणी शत्रवृत्ति' (२१,००० रुपये) से सम्मान
बाएँ से दाएँ ठा. विक्रम सिंह, आचार्य विजयपाल, डॉ. सुरेन्द्र कुमार,
प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु', ब्र. वरुण देव एवं डॉ. जगदेव विद्यालङ्कार

www.thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : १५ फरवरी, २०१७ आर.एन.आई. ३९५९/५९

आचार्य ओमप्रकाश आर्य का 'स्वामी आशुतोष आर्य अध्यापक पुरस्कार' (११,००० रुपये) से सम्मान
बाएँ से दाएँ ठा. विक्रम सिंह, प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु',
डॉ. सुरेन्द्र कुमार, आचार्य विजयपाल, आचार्य ओमप्रकाश आर्य, डॉ. जगदेव विद्यालङ्कार

आचार्य वेदप्रकाश का आर्य को 'श्री बिरदीचन्द आर्ष ईनाणी छात्रवृत्ति' (२१,००० रुपये) से सम्मान
बाएँ से दाएँ पं. सत्यानन्द वेदवागीश, प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु', श्री ओममुनि वानप्रस्थी,
आचार्य नन्दकिशोर आर्य एवं आचार्य वेदप्रकाश आर्य

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

से